शुभाशंसा

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड और नई शिक्षा नीति २०२० के अंतर्गत स्नातक बी.ए. प्रथम वर्ष के ऐच्छिक हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'आधुनिक हिंदी काव्य' पेपर क्रमांक II में काव्य की अवधारणा, काव्य का स्वरूप और आधुनिक हिंदी कविता का विकास के साथ नौं कविताओं को संकलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम में रखे काव्य विधा से संबधित जानकारी और कविताओं के अध्ययन से छात्र परिचित होंगे ऐसा मेरा मानना ही नहीं विश्वास भी है।

हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष डॉ. सुजितसिंह परिहार तथा सभी सदस्यों ने अपने परिश्रम से इसे ज्ञानवर्धक और मौलिक रूप प्रदान किया है। मैं हिंदी अध्ययन मंडल को बधाई देता हूँ और नई शिक्षा नीति २०२० के धरातल पर इस नवीन पाठ्यक्रम का निर्माण हुआ है। इसलिए मैं नूतन पाठ्यक्रम को हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

डॉ. मनोहर चासकर
कुलपति,
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड।

संपादकीय

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड और नई शिक्षा नीति - २०२० के अंतर्गत स्नातक बी.ए. प्रथम वर्ष ऐच्छिक हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'आधुनिक हिंदी काव्य' पेपर क्रमांक II यह नवीन पाठ्यक्रम जून २०२४ से लागू होने जा रहा है, जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार निर्माण कर आप के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष की अनुभूति हो रही है के नूतन पाठ्यक्रम की पुस्तक आपके हाथों में समर्पित होगी।

प्रस्तुत संकलन में हिंदी काव्य विधा की अवधारणा, स्वरूप और आधुनिक हिंदी कविता का विकास के साथ नौं कविताओं को तीन भागों में संकलित किया गया है। बी.ए. प्रथम वर्ष ऐच्छिक हिंदी का अध्ययन करनेवाले छात्र अधिक से अधिक हिंदी काव्य विधा और आधुनिक हिंदी कविताओं से परिचित हो, यहीं हमारी मंशा और उद्देश रहा है। आधुनिक हिंदी काव्य का पाठ्यक्रम के लिए चयन करते समय हमने प्रथम वर्ष के छात्रों को केंद्र में रखते हुए तथा वर्तमान परिवेश जो 'कोराना' के दौर से गुज़रा है, जिससे छात्रों में श्रवन, लेखन, वाचन, अध्ययन, सृजन में कुछ धीमी गति आई है, जिसके कारण छात्रों को साहित्य का बोध, सृजन और ग्रहण सहजता से हो सके, यहीं प्रमुख उद्देश रहा है।

आधुनिक हिंदी काव्य के अंतर्गत भारतेंदु से लेकर कोरोना काल तक की अर्थात आधुनिक युग के अंतर्गत आनेवाले सभी युग विशेष के कवियों की कविताओं को यहाँ श्रृंखलाबद्ध रखा गया है। भारतेंदुजी की मुकरियों से लेकर वर्तमान युग की कविताओं में नवजागर, राष्ट्रीय प्रेम, प्रगतिवादी विचारधारा, स्त्री-विमर्श, पर्यावरण विमर्श, कोरोना संक्रमन जैसे परिवेश को दर्शानेवाली कविताओं को रखने का प्रयास किया है। (दो श्रेयांक के कारण) पाठ्यक्रम की सीमा मर्यादा को ध्यान में रखते हुए हमने आधुनिक युग के कुछ विशेष कवियों की कविताओं का चयन किया है। जिसके कारण कुछ छूट भी सकता है, अपितु छात्रों की आकलन क्षमता के अनुसार सरल-सहज बोधगम्य पाठ्यक्रम रखा है।

इस पाठ्यपुस्तक की उपयोगिता और मौलिकता को बनाए रखने के लिए हिंदी काव्य की अवधारना, स्वरूप, उसका विकास और प्रवृत्तियाँ तथा कवि विशेष का संक्षिप्त परिचय के साथ कविता की मूल संवेदना और कठिन शब्दों के अर्थ को प्रस्तुत किया है। जिससे के छात्रों को सहजता से आकलन हो सके और उनके ज्ञान में वृद्धि हो सके। छात्र हिंदी काव्य विधा से पूर्ण रूप से परिचित होकर उसमें काल्पनिक, भावनीक, बौद्धिक तथा शिल्पगत गुणों का विकास हो सकेगा। साथ ही उनमें मानवीय मूल्य, नैतिकमूल्य, राष्ट्रप्रेम, पर्यावरण का महत्व स्थापित हो सकेगा। इसी आधार पर छात्र पाठ्यपुस्तक का उचित लाभ उठा पाएंगे, जिससे उनके व्यक्तित्व में भी विकास हो पाएगा। हमें विश्वास है कि यह संकलन अपनी मौलिक भूमिका निभा पाएगा।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के निर्माण तथा संपादन का कार्य 'नई शिक्षा नीति-२०२०' के धरातल पर नियोजित है। मेरे इस पाठ्यपुस्तक के संपादन कार्य में स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड के माननीय कुलपति डॉ. मनोहर चासकर, अधिष्ठाता मा. डॉ. पराग खड़के और हमारे हिंदी अध्ययन मंडल के अध्यक्ष डॉ. सुजितसिंह परिहार जी का मौलिक मार्गदर्शन रहा है। साथ ही हिंदी अध्ययन मंडल के सभी सदस्यों का समय-समय पर सहयोग मिलता रहा। आप सभी विद्वजनों के प्रति मैं कृतज्ञता और धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

इस संकलन को 'पाठ्यपुस्तक' के रूप में प्रकाशित कर उसे मौलिक रूप प्रदान करनेवाले 'राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली' के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

संपादक,

डॉ. शेख रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड।

:: आधुनिक हिंदी काव्य ::

Paper Code: HHINC1102

o अनुक्रमणिका o

काव्य : अध्ययन

१.१ काव्य : अवधारणा

१.२ काव्य : स्वरूप

१.३ आधुनिक हिंदी कविता का विकास

१.४ आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियाँ

आधुनिक हिंदी कविता : भाग - १

२.१ मुकरियाँ - भारतेन्दु हरिश्चंद्र

२.२ बीती विभावरी जाग री - जयशंकर प्रसाद

२.३ भिक्षुक - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

आधुनिक हिंदी कविता : भाग - २

३.१ रोटी और संसद - धूमिल

३.२ किताबे - सफ़दर हाशमी

३.३ गीत नया गाता हूँ - अटल बिहारी वाजपेयी

आधुनिक हिंदी कविता : भाग - ३

४.१ इस स्त्री से डरो - कात्यायनी

४.२ जंगल चीता बन लौटेगा - उज्जवला ज्योति

४.३ कोरोना व्हायरस - अनंत काबरा

१.१ काव्य : अवधारणा

हिंदी काव्य साहित्य एक ऐसी साहित्यिकधारा है, जो काल के प्रवाह में निरंतर बहती रही है, आगे बढ़ती रहती है। इस धारा में साहित्यिक परंपराएँ, प्रवृत्तियाँ, आचार- विचार निरंतर रूप से गतिशील रहे, जिसके कारण उसमें समय-समय में अनुकूल और प्रतिकुल परिस्थितियों में परिवर्तन होता रहा है। जिस तरह एक नदी का चंचल प्रवाह निरंतर गति से आगे बढ़ता है, उस प्रवाह में अनेक मोड़, बाधाएँ, गोलाईयाँ, उबड़-खाबड़, सपाट, कभी संकरित तो कभी समृद्ध आदि मार्गों से होते हुए वह अपनी पहचान और अस्तित्व बनाए रखती है। कभी उसमें उफान आता है, तो कभी शांत हो जाती है या कभी उसे उपरी स्तर (पर्वत) से कोसों नीचे झरने का रूप लेकर उतरना पड़ता है। अनेक निदयों को अपने में समाविष्ठ कर वह फिर सागर में समाहित होकर एक विशाल जल स्त्रोत की पहचान बन जाती है। ठीक वैसे ही हिंदी साहित्यिक यात्रा का प्रतिरूप है, वह अनेकों पड़ावों से गुजर कर हिंदी काव्य साहित्य ने भी अपनी पहचान और अस्तित्व बनाए रखा है। हिंदी भाषा ने भी अनेक भाषाओं के शब्दों को अपने में समाविष्ठ कर स्वयं को समृद्ध बनाया है।

काव्य/ कविता यह विधा अत्यंत ही प्राचीन रही है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ, वेद भी इसी विधा में रचीत है। वैदिक काल से यह परंपरा चली आ रही है। इसलिए इसका इतिहास प्राचीन रहा है। विश्व की सभी सभ्यताओं में काव्य/ कविता विद्यमान रही है। काव्य एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से कवि अपने भावस्थितियों को मनोहारी रूप देकर प्रतिबिम्बित करता है। कविता कवि मन के सूक्ष्म संवदेनाओं को वाणी देने का कार्य करती रही है। काव्य पद्यात्मक एवं छन्द-बद्ध रचना होती है। चिन्तन की अपेक्षा काव्य में भावनाओं की प्रधानता होती है। काव्य वह वाक्य रचना है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो अर्थात् जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है। वस्तुत: अनुभूति की सुंदर, सुसम्बद्ध और भाषिक अभिव्यक्ति को 'काव्य' कहते है। कवि के नितांत व्यक्तिगत अनुभवों को समझने और समझाने का माध्यम काव्य भाषा है। कवि समाज में रहकर अपने चारों ओर जो घटित होता है उसका सूक्ष्म निरीक्षण कर उसे ही अपनी काव्य भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है। यह सच है कि समाज में घटित होने वाली घटनाएँ कवि के विचारों, संवेदनाओं और जीवन-मूल्यों को प्रभावित करती है। धीरे-धीरे समाज को समझने की कवि की अपनी एक दृष्टि विकसित होती है। जिससे कवि अपनी विचारधारा और जीवन दृष्टि को काव्य भाषा में व्यक्त करता है। कवि की चेतना विचारों को प्रभावित करती है और विचार उसकी भाषा का सृजन करते है। यही कारण है कि मार्क्स ने भाषा को 'विचार का प्रत्यक्ष यथार्थ' कहा है। कवि या लेखक यथार्थ और भाषा के रिश्ते को पहचानता है। क्योंकि "जिस वृत्त पर वह कृति की कलिका खिलती है वह है भाषा, भाषा भी समयानुसार अपना रूप बदलती रहती है। कला के विकास के साथ-साथ साहित्य में नयी भाषा भी विकसित होते रहती है।" महाकवि निराला के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कला के विकास में ही भाषा का विकास निहित हैं।

जब कभी कवि अपनी संचित अनुभूतियों को व्यक्त करना चाहता है तो उसका सहज और सरल माध्यम भाषा होती है। भाषा ही वह साधन है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति का अनुभव दूसरे तक पहुँचाता है। और इसी प्रक्रिया से संप्रेषण का उद्देश्य सिद्ध होता है। कवि अपनी अनुभूतियों को ही अपनी काव्य भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इसलिए कवि के अपने अनुभव को कहना एक बात है पर उसे प्रभावपूर्ण

ढंग से कहना दूसरी बात है। कवि का ढंग जितना प्रभावपूर्ण होगा उसकी भाषा उतनी ही पाठकों की संवेदनाओं से मेल खाती जाएगी। क्योंकि कवि के लिए काव्य भाषा ही सबसे विश्वसनीय काव्य प्रतिमा है। इस संदर्भ में डॉ. राम स्वरूप चतुर्वेदी का यह कथन उल्लेखनीय है- "नयी कविता के युग में आज जब कविता के सभी परम्परागत भेदक लक्षण, तुक, छंद, अलंकरण, लय धीरे-धीरे विलुप्त हो चले हैं, तो काव्य भाषा ही वह अंतिम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार शेष रह जाता है। जिसके सहारे कविता के आंतरिक संघटन को समझने की चेष्टा हो सकती है।" यही कारण है कि कवि एक ही बात के प्रयास में रहता है कि अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द मिल जाए। इस संबंध में अज्ञेय ने जो बात कही है वह उल्लेखनीय है। उनके मतानुसार "लेखक के नाते और उससे भी अधिक कवि के नाते मैं अनुभव करता हूँ कि यही समस्यां की जड़ है। मेरी खोज भाषा की खोज नहीं है, केवल शब्दों की खोज है। भाषा का उपयोग मैं करता हूँ, निःसंदेह लेकिन कवि के नाते जो मैं कहता हूँ वह भाषा के द्वारा नहीं, केवल शब्दों के द्वारा। मेरे लिए यह भेद गहरा महत्व रखता है।" अज्ञेय का यह कथन स्पष्ट करता है कि काव्य में भाषा का महत्व है और उसका स्वरूप किस प्रकार का हो। समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम भाषा ही है। अनुभव की और जटिलता के आधार पर भाषा स्वयं बदलती रहती है। कवि सफल सम्प्रेषण के लिए मात्र भाषा पर ध्यान केन्द्रित करता है अपितु भाषा की क्षमता को बढ़ाने के लिए उचित अप्रस्तुतों का चयन भी करता है। इस प्रकार से सम्प्रेषण के अनिवार्य उपादानों में भाषा, बिम्ब, प्रतीक और अप्रस्तुतों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

१.२ काव्य : स्वरूप

वैसे काव्य की शुरूआत या आरंभ आदि कवि से माना जाता है। कहा जाता है की, आदि कवि एक बार क्रौंच पक्षी के जोड़े को निहार रहें थे। वह जोड़ा प्रेमालाप में लीन था, तभी व्याध ने बाण से नर पक्षी का वध कर दिया। मादा पक्षी विलाप करने लगी और नर पक्षी के चारों ओर चक्कर काट कर वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गई। यह दृष्य देखकर आदि कवि के हृदय में करूणा जाग उठी और द्रवित अवस्था में उनके मुख से स्वत: ही यह श्लोक उनके मुख से फूट पड़े —

"मा निषद प्रतिष्ठां लंगम: शश्वती: समा:।
यतको चमिथुनादेंक वधी: कामोहितम्॥"

(अर्थात → हे दृष्ट, तुमने प्रेम में मग्न क्रौंच पक्षी को मारा है। जा तुझे कभी भी प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं हो पायेगी और तुझे भी वियोग झेलना पडेगा।) इसी घटना को लेकर छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंतजी ने अपनी काव्य पक्तियों में इस संदर्भ को प्रस्तुत किया है —

"वियोगी होगा पहला कवि, आह! से उपजा होगा गान।
निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।"

इस तर "आह !" इस शब्द से दु:खद भाव को अभिव्यक्त किया गया तभी से कविता का आरंभ हुआ होगा। तब से लेकर आजतक कवि के मन में उठने वाले भावों को शब्दों द्वारा प्रस्तुत करना, पाठकों तक उस भाव को वैसे ही पहुँचाना, कवि का महत्वूपर्ण कर्म माना जाता है।

काव्य शब्द की व्युत्पत्ति :

काव्य, कविता, पद्य, कवित्व आदि सभी शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'कु' धातू से हुई है। जिसके अनेक अर्थ निहित है, जैसे की शब्दों का निर्माण, व्याप्ति, आकाश, सर्जनता आदि तो 'कवि' शब्द का अर्थ है 'सृजनशील व्यक्ति' और कविता याने 'सृजन'। सृजन का संबंध नवीनता से है। इस तरह सृजन में नयी धारणाएँ/ संकल्पनाएँ, नये रंग, नया संयोजन, नये ध्वनिबंध, नये रूपक, नये प्रतीक, नया रूप, नयी शैली, नयी शब्द योजना, नया बिम्ब विधान आदि चीजे आ जाती है।

काव्य की परिभाषा :

कविता मूलत: भाषिक अभिव्यक्ति है। भाषा से ही कविता की रचना होती है, तभी नयी कविता और उसकी नयी भाषा का निर्माण भी होता है। कविता की भाषा 'गागार में सागर' भरने की कला कहलाती है। जो कम वाक्यों में बहुत कुछ कह जाती है। इसलिए कविता/ काव्य की भाषा संक्षिप्त, सरल, बोधगम्य, व्याकरण संमत होती है। तब भाषा कविता की 'वाहक' या 'साधन' न होकर 'माध्यम' बन जाती है।

(१) आचार्य विश्वनाथ : साहित्य दर्पनकार के अनुसार, 'रसात्मक वाक्यम् काव्यम्' तात्पर्य — रस अर्थात मनोवगों का सुखद संचार ही काव्य की आत्मा है।

(२) आचार्य पंडितराज जगन्नाथ ने काव्य की परिभाषा इस प्रकार दी है, "रमणीयार्थ प्रतिवादक: शब्द: काव्यम्।" अर्थात रमणीय अर्थ को प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है। पं. जगन्नाथ ने 'रमणीयार्थ प्रतिपादक शब्द' जोड़कर उसको अलौकिक आनंद की ओर संकेत किया है, जो कविता का प्राणतत्त्व है। 'रमणीय' शब्द के कारण भाव, अलंकार, ध्वनि आदि सभी काव्य की परिधि में आ जाते है।

(३) आचार्य विद्याधर के अनुसार 'कवयतीति कवि: तस्य कर्म काव्यम्' अर्थात् जो वर्णन करता है, कविता करता है, उसके कर्म को 'काव्य' कहते हैं।

(४) आचार्य अभिनव गुप्त के अनुसार 'कवनीयं काव्यं' अर्थात् जो वर्णनीय है वही काव्य है।

(५) वॅट्स-डन्टन के अनुसार 'भावपूर्ण और लयबद्ध भाषा में होनेवाली मानवीय मन की समूर्त और कलात्मक अभिव्यक्ति कविता है'।

(६) काव्य, कविता या पद्य साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्ति किया जाता है।

काव्य/ कविता के तत्व :

काव्य को ठीक से समझने के लिए लक्षणों के साथ-साथ उसके प्रमुख तत्वों की पहचान भी आवश्यक है। काव्य में एक विशिष्ट प्रकार का भाव होता है, इस भाव को ठीक से परखने वाला, सोचने वाला एक विचार होता है, इसे सजाने वाले तथा इसे प्रकट करने वाले भी तत्व होता है। इन सभी का मिला-जुला हुआ जो रूप तैयार होता है, उसे ही काव्य के तत्व कहा जाएगा। इस आधार पर काव्य के तत्व निम्न अनुसार है —

[१] पाश्चात्य विद्वान द्वारा - (१) भाव तत्त्व, (२) कल्पना तत्व, (३) बुद्धि तत्व, (४) शैली तत्त्व। पाश्चात्य विद्वान विचेंस्टर ने इन चार तत्वों की सत्ता को माना है। सही अर्थो में इन्ही तत्वों के कारण ही काव्य या साहित्य को सौंदर्य प्राप्त होता है। भाव तत्व काव्य की आत्मा है। बुद्धि तत्व काव्य में सत्य का प्रकाश लाता है। सौंदर्य दृष्टि उत्पन्न करने में कल्पना तत्व का योगदान सराहनीय है। शैली भाषा पर निर्धारित रहती है। भावना के अनुसार शैली में परिवर्तन होता है।

[२] भारतीय प्राचीन आचार्यों और विद्वानों द्वारा बताए गए काव्य के तत्त्व कुछ इस प्रकार है - (१) रस तत्व, (२) अलंकार तत्व, (३) रीति तत्व, (४) ध्वनि तत्व, (५) वक्रोक्ति तत्व, (६) औचित्य तत्व।

[३] सर्वमान्य तत्व - (१) शब्द तत्व, (२) अर्थ तत्व, (३) भाव तत्व, (४) कल्पना तत्व, (५) बुद्धि तत्व इस प्रकार से है।

१.३ आधुनिक हिंदी कविता का विकास

हिंदी भाषा तथा हिंदी काव्य साहित्य की विकास यात्रा के अनेक पड़ावों को हम देखे तो निम्नरूप से उसकी विकास यात्रा देखी जा सकती है। जैसे की -

वैदिक संस्कृत → संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → खड़ी बोली हिंदी → आधुनिक हिंदी → मानक हिंदी

हिंदी काव्य साहित्य विविध काल के अनुरूप विकासित होता आया है। प्राचीनकाल से लेकर आजतक विविध संस्कृतियाँ, सभ्यता, परंपराएँ और धार्मिक मूल्यो का निर्वाहण वह करती रही है। जिसने अनेक भावों को, शब्दों को अपने में समाहित किया है। हिंदी साहित्य के इतिहास में अनेक विधाएँ है जिनमें एक महत्वपूर्ण 'पद्य' विधा है, अर्थात 'काव्य' विधा जो प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक प्रवाहमान रही है। जो समय-समय पर राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित रही। हिंदी कविता की यह लंबी विकास यात्रा को सहज आकलन के लिए उसे चार कालों में विभाजित किया गया है। वैसे हिंदी काव्य साहित्य के काल विभाजन को लेकर अनेक विद्वानों के मतभेद है। परंतु यहाँ आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा स्वीकृत काल विभाजन को प्रस्तुत किया जा रहा है।

१)	आदिकाल	(वीरगाथा काल)	→	संवत १०५० से १३७५ तक
२)	पूर्व मध्यकाल	(भक्तिकाल)	→	संवत १३७५ से १७०० तक
३)	उत्तर मध्यकाल	(रीतिकाल)	→	संवत १७०० से १९०० तक
४)	आधुनिक काल	(गद्यकाल)	→	संवत १९०० से आजतक

आधुनिक काल (गद्यकाल — संवत १९०० से आज तक) :

१९०० संवत से आजतक के काल को आधुनिक काल कहा जाता है। आधुनिक काल को भी विभिन्न नामों से जाना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने इसे 'गद्यकाल' कहा है। अनेक विद्वानों ने इस काल को विद्रोही काल, परिवर्तनकाल कहकर संबोधित किया। इस काल की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही की 'गद्यसाहित्य' का भी विकास इस काल में ही हुआ है। वहीं विशेष रूप से 'काव्य साहित्य' का भी विकास भी

इसी काल में हुआ। यहां 'आधुनिक' शब्द को दो अर्थो में प्रयुक्त होता है। पहला अर्थ समय सापेक्ष है, इसमें आधुनिकता का अर्थ 'वर्तमान' के रूप में निहित है। आधुनिक का दूसरा अर्थ विशिष्ट उद्देश्य या दृष्टिकोण से लिया जाता है। जो मध्ययुगीन जड़ता से भिन्न नयी दृष्टि का यह परिचायक है। डॉ. नगेन्द्र जी इसी आधुनिकता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखते है, "आधुनिकता का अर्थ व्यापक और गत्यात्मक मानना चाहिए। युगबोध परम्परा का संशोधन, जीवन की वैविध्य की स्पृहा, अपने और पर्यावरण के माध्यम से आत्मसिद्धि की आकांक्षा आदि उसके सही लक्षण है।" इसी दृष्टि से जब हम इस काल को देखते है तो पूर्व कालों से बिल्कुल भिन्न और विशिष्ट पाते है। क्यों कि इसी काल में गद्य साहित्य के अंतर्गत गद्य की विविध विधाओं का आरंभ और विकास हुआ है। इस काल के साहित्य को समझने के लिए आधुनिक कालीन परिस्थितियों का संक्षिप्त रूप देख सकते है। राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए तो इस काल में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना भारत में हो चुकी थी। शासन और अर्थव्यवस्था की बागडोर अंग्रेज शासन के हाथों में आ चुकी थी। विक्टोरिया के शासनकाल में अनेक प्रकार के निर्णय लिए गए। अंग्रेजी सभ्यता, भाषा और साहित्य प्रचार और प्रसार के लिए लॉर्ड मैकाले ने अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का प्रचलन करवाया जिसके कारण अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में भारतीय समाज रंगने लगा था। अंग्रेजी शासन की अंग्रेजी की शिक्षा प्रणाली को लेकर भी उनकी अपनी एक कुटनीति थी। १८८५ में कॉंग्रेस की स्थापना हुई जिसके कारण कई क्रांतिकारी संस्थाओं का निर्माण हुआ एवं विकास के कार्य होने लगे।

१९२० में कॉंग्रेस की बागडोर महात्मा गांधीजी ने अपने हाथों मे ली। उन्होंने विदेशी वस्तुओं, नौकरिओं, स्कूलों, कॉलेजो, न्यायलयों और उपाधियों का बहिष्कार किया। मा. गांधीजी और अनेक भारतीय क्रांतिकारी नेताओं के अथक परिश्रम, प्रयासों से भारत वर्ष १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्र हुआ। जिससे स्वदेशी आंदोलनों, नीतिमूल्यों आदि का हिंदी साहित्य पर भी अच्छा खासा प्रभाव पड़ा। धार्मिक परिस्थिति भी स्वतंत्रता के लिए अनुकूल थी, क्योंकि उस समय अनेक धार्मिक आंदोलन चरम पर थे। इसाई धर्म के प्रचार-प्रसार की प्रतिक्रिया में आर्य समाज की स्थापना की गई थी। साथ ही तत्कालीन विविध सामाजिक आंदोलनों के कारण भी देश में परिवर्तन आया, नवक्रांति आई। क्योंकि सामाजिक आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य था देश की स्वाधिनता। तब ब्राह्मण समाज, आर्य समाज, सनातन धर्म आदि संस्थाएँ प्रमुख थी। ब्रह्म समाज के प्रवर्तक राजा राममोहन रॉय, आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी विवेकानंद इनके अलावा महादेव गोविंद रानडे साथ ही थियोसाफिकल सोसायटी द्वारा एनी बेसेंट ने समाज सुधार जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए, जिसमे इनका मौलिक योगदान रहा है। बाल-विवाह, सती प्रथा तथा रूढ़ियों, जाति-भेद, धार्मिक मतभेद, दहेजप्रथा, परदा प्रथा, पूंजीवाद, जमींनदारी प्रथा, अंधविश्वास आदि का विरोध करने हेतु इन समस्त सामाजिक संस्थाओं और आंदोलनकारियो ने मौलिक योगदान दिया। अंग्रेजों द्वारा भारत का आर्थिक शोषण होता रहा। प्रथम और द्वितीय महायुद्धने तथा अकाल, बेरोजगारी, मंहगाई आदि ने भारतीय अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी थी। इन सभी परिस्थितियों का भी हिंदी साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ता दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद जब मोहभंग हुआ, सामान्य जन के सपने चूर-चूर हुए तब भी हिंदी साहित्य पर इसका विशिष्ट प्रभाव पड़ा। कुल मिलाकर आधुनिक काल संवत १९०० से वर्तमान तक चलता रहा। यह प्रदीर्घकाल हिंदी काव्य की प्रवृत्तियों की विभिन्नता के आधार पर इसे विभाजित किया गया है। आधुनिक काल जो विशाल और प्रदीर्घ काल होने के

कारण ही भारतेन्दु काल, द्विवेदीकाल, छायावाद काल, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता आदि नामों से छोटे-छोटे चरणों में इसे विभाजित किया गया है। जिसे निम्नरूप से देखा जा सकता है।

भारतेन्दुकाल (संक्रातिकाल) : १८५७ से १९०० इ.स. तक यह काल आधुनिक काल का प्रथम चरण माना जाता है। इस काल के साहित्य में एक ओर आधुनिक भाव-बोध के प्रति आकर्षण तो था परंतु दूसरी ओर रीति और परंपराओं के प्रति मोह भी था। इसलिए आधुनिकाल के इस कालखंड को 'संक्रातिकाल' भी कहा जाता है। साथ ही इस काल की विशेष विशेषता यह है की इसकाल में हिंदी साहित्य में गद्य साहित्य का विकास हुआ। क्योंकि इस युग की खड़ीबोली, गद्य साहित्य का प्रवेशद्वार ही भारतेंदु युग को माना जाता है। इस युग को 'नवजागरण' या 'पुर्नजागरण' काल भी कहा जाता है। इस काल में कविता के क्षेत्र में जहाँ ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया तो वहीं गद्य के क्षेत्र में खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग होने लगा। भारतेंदु युग में ही गद्य के विविध विधाओं का विकास हुआ। जैसे — पत्रकारिता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना आदि विधाओं की सृजना हुई। इस काल के कवियों का काव्य क्षेत्र अध्यात्मिक भाव से जुड़ा रहा, जहाँ इन कवियों ने भक्तिरस, श्रृंगार रस, रीति निरूपण, प्रकृति चित्रण के साथ-साथ राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना को भी साहित्य का अपना हिस्सा बनाया। इस युग में हिंदी कविताओं में देश भक्ति, राष्ट्रप्रेम, राजभक्ति एक साथ अभिव्यक्त हुई है। जहाँ अंग्रेज शासन की चतुरता और चापलूसी को लेकर भारतेंदु जी ने मुकरी के माध्यम से उसे प्रस्तुत किए है।

"भीतर-भीतर सब रस चूसैं
हँसि-हँसि कै तन-मन-धन मूसैं
जाहिर बातन मैं आति तेज
क्यों सखि सज्जन नहीं अँगरेज।"

इस काल के कवियों ने भक्त कवियों की तरह पद भी लिखे, लीला गान भी लिखा, नायिका भेद या नख-शिख वर्णन भी लिखा। साथ ही राष्ट्रप्रेम को भी अभिव्यक्त किया। प्राचीनता और नवीनता का समन्वय इस काल में दिखाई देता है। इन कवियों ने एक ओर धार्मिक रूढ़िवादीता, अशिक्षा, अज्ञान, कर्मकांड, बहुविवाह आदि का तीव्र विरोध किया है तो दूसरी ओर बेकारी भ्रष्टाचारी, अव्यवस्था, पुलीस अत्याचार, व्याभिचार, घूसखोरी जैसे अनेक समस्याओं का चित्रण किया गया है। राष्ट्रप्रेम को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत देशवासियों को पुर्नजागरण का मंत्र दिया तथा पराधीन भारत देश की दुर्दशा का चित्रण भारतेंदु जी अपने 'भारत दुर्दशा' नाटक में इस्ट इंडिया कंपनी को भारत की दुर्दशा के लिए दोषी मानते और कहते है-

"रोवहु सब मिलिं कै आवहु भारत भाई,
हा !— हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई।"

इस काल की अधिकतर रचनाएँ उपदेशात्मक, सुधारात्मक, और इतिहासात्मक है। इस काल में मौलिक काव्य रचनाओं के साथ-साथ संस्कृत और अंग्रेजी काव्य का अनुवाद भी किया गया। इस काल के अधिकांश काव्य मुक्तक काव्य रूपों में लिखे गए थे। भारतेंदु और उनके समकालीन कवियों ने श्रृंगार रस

को केन्द्र में रखकर काव्य सृजन भी किया। जिसके लिए ब्रजभाषा का बखुबी प्रयोग हुआ है। भारतेंदुजी के अलावा श्रीनिवास दास, गोस्वामी किशोलीला, गिरिधर दास, बद्री नारायण चौधरी, प्रेमघन, प्रताप नारायण मिश्र, अंबिकादत्त व्यास, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह आदि उल्लेखनिय है।

द्विवेदी युग (जागरण सुधारकाल) : सन १९०० से १९१८ तका का समय हिंदी साहित्य के इतिहास में 'द्विवेदी युग, जागरण सुधार युग, पूर्व स्वच्छनदतावादी युग' आदि नामों से भी जाना जाता हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र तथा उनके सहयोगी साहित्यकारों ने जो आधुनिक नयी दृष्टि का सुत्रपात किया था, उसका विकास इस कालखंड में हुआ है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा और निर्देश के साथ उनका मौलिक योगदान इस काव्य विकास यात्रा में रहा है। इसलिए इस युग की साहित्यिक विकास यात्रा के सुत्रधार महावीर प्रसाद द्विवेदी माने जात है। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन १९०३ से १९२० तक सुचारू रूप से किया। उन्होंने गद्य और पद्य के लगभग ८० ग्रंथों की रचना की है। द्विवेदी जी ने खड़ीबोली भाषा का विकास कर उसे संस्कारित, परिष्कृत एवं व्याकरणबद्ध बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया साथ ही उसे पद्य की भाषा भी बनाई। जिससे स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीय चेतना को जागृत कराने के लिए खड़ीबोली हिंदी का काव्य भाषा के रूप में उचित प्रयोग होने लगा। परिणामस्वरूप देश के सामान्य वर्ग में देशप्रेम तथा आदर की भावना निर्माण होने लगी थी। मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास हो रहा था। भारतीय स्त्रियाँ भी राष्ट्रीय आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगी थी। स्त्रियों के प्रति सम्मानपूर्वक दृष्टि से देखा जाने लगा था। पारंपरिक बंधनों से मुक्त करने की बातें काव्यों में कही जाने लगी। मैथिलीशरण गुप्त, आयोध्या सिंह 'हरिऔंध' उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी आदि कवि स्त्रियों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए काव्य सृजन कर रहे थे। मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'साकेत और उर्मिला' जैसी रचनाएँ लिखकर स्त्री को मानवीय रूप में प्रस्तुत कर उनकी व्यथा को समाज के समक्ष रखा। इन कवियों ने मानव और मतानवतावादी आदर्शों के प्रति आस्था प्रकट की इसलिए यहाँ राम, कृष्ण आदि देवता भी मानव के रूप में प्रस्तुत हुए है। कृषकों तथा मजदूरों की व्यथा का चित्रण किया साथ ही विधवाओं के दु:ख को भी उबारा गया। विधवा विवाह को बढ़ावा दिया तथा बालविवाह, सतीप्रथा, जातिभेद, छुआ-छुत, छल, कपट आदि बाह्यआडंबरों का खुलकर विरोध किया गया। द्विवेदीयुगीन काव्य आदर्शवादी और नीतिपरक रहा है। इस काल का काव्य बुद्धिवाद, मानवतावाद और आदर्शवाद इन त्रिवेणी विचारों का संगम रहा है। साथ ही इस काल के काव्य में प्रकृति चित्रण प्रस्तुत हुआ है। द्विवेदी जी के काव्य में हास्य और व्यंग्य जैसे विषय भी देखने को मिलते है। हास्य रस के माध्यम से व्यंग्यात्मक रूप में राजनीतिक, शोषण, सामाजिक-कुरीतियाँ, धार्मिक आडंबर, पाश्चात्य अनुकरण, व्याभिचार आदि के पद व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किए गए। अयोध्यासिंह 'हरिऔध' द्वारा रचित 'प्रिय प्रवास' को खड़ीबोली का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। 'प्रिय प्रवास' और 'वैदेही वनवास' में स्त्री के सशक्त रूप को प्रस्तुत ही नहीं गया अपतु उसके आदर्श तथा मानवरूप को प्रस्तुत किया गया है, स्त्री चेतना या स्त्री विमर्श को प्रस्तुत करने की कोशिश की गई। हरिऔंध जी ने प्रिय प्रवास के माध्यम से कृष्ण और राधा को एक आदर्श एवं समाज सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने स्त्री के मातृत्व भाव और स्त्री संवेदना दोनों का बढ़े ही आदर्शता के साथ चित्रण किया है -

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
आंचल में दूध और आँखों में है पानी।"

इसके अलावा इन कवियों ने अतीत का गौरवगान भी किया है। द्विवेदीजी ने अनुवाद की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप देशी-विदेशी भाषाओं के साहित्य का खड़ीबोली हिंदी में अनुवाद होने लगा। इसके अलावा काव्य रूपों में नवीन प्रयोग, खड़ीबोली का परिष्कार आदि इस काल की विशेषताएँ रही है। महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह 'हरिऔंध', नाथूराम शंकर, गोपाल शरणसिंह, मैथिलीशरण गुप्त आदि इस युग के प्रमुख कवियों में से हैं।

छायावादी काल (स्वच्छन्दवादी काल) : सन १९१८ से १९३६ तक के कालखंड को मुख्यत: 'छायावाद' काल कहा जाता है। वैसे इस काल को स्वच्छन्दवादीकाल, आलोच्यकाल भी कहा जाता है। परंतु 'छायावाद' एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जो जीवन के प्रति देखने का एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है। भारत की प्राचीन संस्कृति और पाश्चात्य काव्य के प्रभाव को ग्रहण करती हुई छायावादी कविता राष्ट्रीय जागरण के सानिध्य में विकसित होती रही। इस काव्य की दार्शनिकता प्राचीन अद्वैतवाद तथा सर्वात्मवाद से प्रभावित रहीं है। अंग्रेजी साहित्य में स्वच्छंदतावाद (रोमाटिसीज़म्) का आरंभ अठारहवी शताब्दी में सेम्युअल, रिचर्डसन, हेनरी फल्डिंग और गोल्ड स्मिथ से माना जाता है। आगे चलकर इस धारा के अंतर्गत वर्डस्वर्थ, शैली, कीटस बायरन आदि ने अपने काव्य का सृजन किया। इनके काव्य का प्रभाव हिंदी कविताओं पर भी देखने को मिलता है। अंग्रेजी साहित्य के रोमांटिसीज़म् और हिंदी के (स्वच्छंदतावाद) काव्यधारा की प्रमुख विशेषताऐं - मानवतावाद, वैयक्तिकता, प्रेम की अभिव्यक्ति, रहस्यात्मकता, प्राचीन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति में चेतना का आरोप, गीतिशैली आदि का छायावादी काव्य में प्रमुख रूप से देखने को मिलती है। अंग्रेजी साहित्य के रोमांटिसिज़म् जैसी छायावाद में समानता को देखकर कुछ आलोचकों ने छायावाद को अंग्रेजी रोमांटिसिज़म् का हिंदी संस्करण कहा है। छायावादी जीवन और जगत के प्रति अपना एक निश्चित दृष्टिकोण ही इस भूमि की उपज है। छायावाद काव्य मूलत: आंतरिक सूक्ष्म अनुभूतियों का कल्पनाश्रित कलात्मक सौंदर्य की निर्मिती है। प्रेम, प्रकृति, सौंदर्य, वेदना, राष्ट्रभक्ति, रहस्यवादी भावना इनके महत्वपूर्ण विषय रहें है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा इन चार कवियों को छायावादी काव्यधारा के प्रमुख आधार स्तंभ के रूप में माना जाता है। इन कवियों ने भाव और कला पक्ष को महत्व दिया तथा काव्य के शास्त्रीय बंधनों, रूढ़ियों को अस्वीकार किया। छायावादी कवियों का मूल स्वर 'व्यक्तिवाद' रहा है। अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों को इन कवियों ने समष्टिगत बना दिया। "मैं" के व्यक्तिगत रूप को सर्वसामान्य के भाव में समाहित कर दिया। जैसे के जयशंकर प्रसाद की "आँसू", पंत की "उच्छावास" आदि व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति का सुंदर उदाहरण देखने को मिलते है। निराला और महादेवी जी की वैयक्तिक वेदना सार्वभौमीक वेदना के रूप में प्रस्तुत हुई है। यहाँ निराला जी की काव्य पँक्तियों को उदाहरण के रूप में देख सकते है जो विशेष है।

"मैंने 'मैं' शैली अपनाई, देख एक दुखी निज भाई।
दुख की छाया पड़ी हृदय में, झट उमड़ वेदना आई॥"

छायावादी कवियों ने प्रकृति चित्रण भी अत्यंत ही सुंदर रूप में चित्रित किया है। प्रकृति के स्थूल बाह्यसौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण कर, प्रकृति का मानवीकरण किया है। इसलिए प्रकृति को भी कभी मातृत्वभाव

के रूप में, तो कभी प्रियतमा के रूप में, तो कभी रहस्यमयी सत्ता के रूप में छायावादी कवियों ने अपने काव्य में उसे चित्रित किया। सुमित्रानंदन पंत की कविता का उदाहरण दृष्टव्य है -

"छोड़ दृमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से माया।
बाले ! तेरे बाल चाल में, कैसे उलझा दूँ मैं लोचन॥"

छायावादी कवियों के काव्य में प्रकृति के साथ-साथ नारी प्रेम का भी सुंदर चित्रण हुआ है। साथ ही मानवप्रेम, देशप्रेम, अज्ञात रहस्यमयी सत्ता के प्रति प्रेम आदि विविध रूपों में प्रेमाभिव्यक्ति हुई है। छायावादी काव्य में अभिव्यक्त 'उच्च कोटि के प्रेम भाव' को देखकर इसे 'प्रेमकाव्य' भी कहा गया है। यह प्रेम पवित्र और अलौकिक जान पड़ता है जिसमें अश्लिलता या मांसलता के लिए कोई स्थान नहीं है। इस काव्य में नारी अधिकतर देवी रूप, मातृ रूप, सहचरणी रूप और अधिकतर प्रियसी रूप में प्रस्तुत हुई है। जैसे के जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' सर्ग में श्रद्धा के सुंदर, सौंदर्यपूर्ण तथा स्त्री के आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है।

"निल परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अदखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघबन बीच गुलाबी रंग।"

इसके साथ ही स्त्री वेदना और उसके प्रति संवेदनाओं की अभिव्यक्ति भी अत्यंत विस्तृत रूप से हुई है। लौकिक और अलौकिक प्रेम के भाव का जिसमें संयोग की अपेक्षा वियोग के भाव अधिक चित्रित हुए है। महादेवी वर्मा की विरह वेदना जो अपने अज्ञात प्रियतम के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

"विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा नभ भी अपना होना,
परियच इतना, इतिहास यही -
उमड़ी कल थी, मिट आज चली
मैं नीर भरी दु:ख की बदरी।"

वैसे छायावादी कवियों ने अज्ञात सत्ता के प्रति कौतुहल, जिज्ञासा तथा प्रेमभाव प्रकट किया है। इनका काव्य रहस्यवादी भावनाओं से ओतप्रोत दिखाई देता है। छायावादी कवियों के काव्य में, विशेषकर राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति भी विशेषकर प्रस्तुत हुई है। जिसका उदाहरण यहां माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य पँक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है।

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।"

इस तरह छायावाद में राष्ट्रभक्ति के भाव को भी उचित स्थान मिल पाया है। साथ ही मानवतावाद को बड़े ही आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त किया है। मानवतावादी दृष्टिकोण में नारी को भी मानव के रूप में प्रस्तुत कर पीड़ित नारी के प्रति सम्मान और संवेदना प्रस्तुत हुई है। साथ ही मानवजीवन के असंतुलन,

अशांतिपूर्ण जीवन को संतुलीत और आनंदपूर्ण जीवन जीने के लिए अपने महाकाव्य 'कामायनी' के माध्यम से जयशंकर प्रसाद मानव के लिए संदेश देकर वे कहते है -

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न हो,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सके
यह विडंबना है जीवन की।"

इस काव्य पँक्तियों के माध्यम से मानवजीवन के संतुलन को बनाए रखने की बात कही गई है। इन छायावादी कवियों ने प्रकृति का सुंदर चित्रण किया है। प्रकृति के माध्यम से मानवीकरण कर उषा-नीशा जो सुख-दुख के प्रतीक रहें चंद्र, सुर्य आदि इन प्रतीकों के माध्यम से जयशंकर प्रसाद कहते है

"शशि मुख पर घूँघट डाले, आंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोथूली में, कौतूलह से तुम आए।"

छायावादी काव्य आधुनिक हिंदी साहित्य में अपनी अलग एक पहचान रखता है। क्योंकि इन कवियों ने 'कला - कला के लिए' इस सिद्धांत को लेकर कविताओं का सृजन किया है। जिनमें सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा आते है। छायावादी काव्य के समकालीन राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। तो 'हलावादी' काव्यधारा के प्रमुख कवियों में जो महत्वपूर्ण नाम लिया जा सकता है उनमें डॉ. हरिवंशरॉय बच्चन जो 'हालावादी' साहित्य के जनक माने जाते है। इनके अलावा भगवतीचरण वर्मा, नरेंद्र शर्मा, केशवदास मिश्र, बालकृष्णा शर्मा 'नवीन' आदि कवियों का महत्वूपर्ण योगदान रहा है।

प्रगतिवादी काव्य : १९३६ से १९४३ तक का समय 'प्रगतिवादी काव्यधारा' का रहा है। इस काव्यधारा के बारे में कहा गया है की, "जो विचारधारा राजनीति के क्षेत्र में समाजवाद और दर्शन के क्षेत्र में द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है, वही साहित्य के क्षेत्र में प्रगतिवाद के नाम से पहचानी जाती है।" दूसरे शब्दों में कहना हो तो मार्क्स की साम्यवादी विचारधारा से प्रणीत काव्यधारा प्रगतिवादी है। प्रगतिवादी साहित्य की बात करें तो यह साहित्य काल मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित है। जो विश्व-कल्याण की, विश्व-मानवता की बात करता है। मार्क्स ने विश्व-मानवता को दो वर्गों में विभाजित किया है — एक शोषक तो दूसरा शोषित। शोषक वर्ग में पूँजीपति, मालिक, जमींदार, व्यापारी आदि वर्ग आते है, तो शोषित वर्ग में किसान, मजदूर का वर्ग आता है। किसान और मजदूर की शक्ति को हंसिया और हतौड़े के चिन्ह के रूप में प्रस्तुत कर, किसानों और मजदूरों की शक्ति की एकजुटता से विश्व में क्रांति और पतिवर्तन लाया जा सकता है। १९३६ में प्रेमचंद की अध्यक्षता में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई और हिंदी में प्रगतिवादी साहित्य सृजन होने लगा। प्रगतिवादी काव्यधारा में राष्ट्रीयता और सामाजिक विषमताओं, तथा सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति को केंद्र में रखा गया। ईश्वरी सत्ता को नकार कर मानवतावाद का संदेश दिया गया है। इन कवियों ने पुराणी परंपराओं, रूढ़ियों, अंधविश्वास, धर्म तथा धर्म ग्रंथों पर प्रहार कर केवल मानवतावाद पर बल दिया है। भूखे, नंगे,

भिखमंगे मजदूर और किसानों की व्यथा को चित्रित किया है। डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' अपनी कविता 'जागरण' में कहते है —

"देखो यह नंगे भिखमंगे, आए है नूतन वेश लिए
नवजगती में नवयुग का नव संदेश लिए।"

मार्क्स का उद्देश्य ही था की समाज में समानता स्थापित करना। इस विचारधारा का प्रभाव केवल आर्थिक व्यवस्था पर ही नहीं पड़ा बल्कि धर्म, दर्शन, कला और साहित्य पर भी पड़ा। मार्क्स के विचारों से प्रभावित साहित्य, हिंदी में प्रगतिवादी काव्य कहलाया। यह कवि समाज में परिवर्तन और क्रांति लाना चाहते थे। शोषितों पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए समाज में फैली हुई आर्थिक विषमता की खाई को मिटाना चाहते है। वे कहते है —

"श्वानों को मिलता वस्त्र दूध, भूखे बालक अकुलाते है।
माँ की हड्डी से चिपक ठिठूर, जाड़ों की रात बिताते है।"

यह कवि मानवतावाद का उद्धार करना चाहते है। उन्हें विश्व के सभी पीड़ित-शोषित लोगों के प्रति गहरी सहानुभूति है। वे जाति, धर्म से परे जाकर मानव को मानव के रूप में देखना चाहते है। ये कवि वेदना और निराशा में भी सुख से भरी आशा को देखते है। द्वितीय युद्ध और बंगाल के अकाल, देश-विभाजन, हिंदु-मुस्लिम फ़साद, गांधी हत्या, मंहगाई, दरिद्रता, बेकारी आदि समस्याओं का सजीव चित्रण इनके काव्य में देखने को मिलता है। नागार्जुन जी के काव्य में बंगाल के अकाल का सजीव चित्रण देखने को मिलता है —

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास।
कई दिनों तक, कानी कुतिया सोई उसके पास।"

इस तरह हम देखते है कि प्रगतिवादी कवि और उनका काव्य मानवतावाद और समानतावाद का पक्षधर था। इस काल के कवियों में सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन', भगवती चरण वर्मा, राम विलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह आदि का नाम उल्लेखनिय है।

प्रयोगवादी काव्य : प्रयोगवादी काव्यधारा का आरंभ १९४३ से माना जाता है। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को इस काव्यधारा का प्रवर्तक माना जाता है। जिन्होंने १९४७ में स्वयं के संपादकत्व में विविध कवियों की कविताओं का संग्रह प्रथम 'तारसप्तक' नाम से प्रकाशित किया और दूसरा 'तारसप्तक' १९५१ में प्रकाशित हुआ। प्रयोगवाद को प्रतीकवाद, प्रपद्यवाद, रूपवाद आदि विविध नामों से जाना जाता है। प्रपद्यवाद को शुरू-शुरू में 'नकेनवाद' नाम से भी जाना जाता था। प्रयोगवादी कवि अन्वेषी है, अपने 'नये सत्य' की खोज के लिए नयी अभिव्यक्ति शैली के अंतर्गत नये उपमानों, नये बिम्बों और नये प्रतीकों को खोजता रहा है। जिसके कारण नये-नये प्रयोग इस काल के काव्यों में होते रहे है। जिसके कारण इस काल के काव्य का नाम 'प्रयोगवाद' पड़ा होगा।

प्रयोगवादी कवि व्यक्ति केंद्रित रहने के कारण उन्होंने अपनी कविताओं में व्यक्तिगत मान्यताओं, विचारधाराओं और अनुभूति की अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया है। यहाँ इन कवियों का 'अहं' और 'व्यक्तित्व' मुखरित हो उठा है। इनका समस्त काव्य 'व्यक्ति में समष्टि' के रूप में प्रस्तुत हुआ है, यहाँ अज्ञेय जी की 'नदी के द्वीप' इस कविता का उत्कृष्ठ उदाहरण है प्रस्तुत है -

"हम नदी के द्वीप है।
हम नहीं कहते कि हम को छोड़कर
स्त्रोतस्विनी बह जाए।
वह हमें आकार देती है
हमारे कोण, गलियाँ, अंतरीप, उभार
सैकत कूल,
सब गोलाइयाँ उसकी गढ़ी है।"

प्रयोगवादी कवियों ने कुंठा, घुटन, निराशा, ईर्षा, द्वेष, कामवासना जैस दूषित मनोवृत्तियों का भी चित्रण किया है। जिन वस्तुओं को समाज में अश्लील या अरूचि कर, या फिर विभत्स समझा जाता है। ये कवि ऐसी वस्तुओं का सजिव चित्रण कर स्वयंम् को गौरवपूर्ण अनुभव करते है। इन कवियों ने भावुकता के स्थान पर बौद्धिकता को प्रतिष्ठित किया है। इन कवियों का दृष्टिकोण जगत के प्रति क्षणभुंगरता, क्षणवादी, निराशावादी रहा है। इसलिए उन्हें न भविष्य पर विश्वास है न अतीत से कोई लेना-देना। वे पूरी तरह ईश्वर की सत्ता को नकार चुके थे। इन कवियों ने चींटी से लेकर हिमालय तक सभी को अपने काव्य का विषय बनाया है। उन्हें व्यक्ति और उसके सामर्थ्य पर अटूट विश्वास था इसलिए यह कवि मानव को महत्व देते हुए उसे इस सृष्टि का महत्वूपर्ण घटक मानते है।

भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो इन कवियों ने खड़ीबोली हिंदी को तोड़-मरोड़कर उसका प्रयोग किया है। गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविता ओरांग उटांग, अंधेरे में, भूल, गलती, ब्रह्मराक्षस जैसी कविताओं का काव्यशिल्प फैंटेसी (फंतासी) प्रमुख रूप से रहा है। जो रहस्य से घिरा हुआ, साथ ही यथार्थ पर आधारित यहाँ फैंटसी भाव है। जो यथार्थ और भयानक सत्यों से हमे भटकाते नहीं है, अपितु उनसे हमारा परिचय कराते है। यहाँ मुक्तिबोध की कविता 'दिमाग़ी गुहान्धकार का ओरांग उटांग' का उत्कृष्ठ उदाहरण प्रस्तुत है, जो मानव में छिपे ओरांग उटांग (राक्षस/ यक्ष) के दर्शन कराते है। जिसे कवि ने बड़े ही रहस्यात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है, जो मानव का ही एक विभत्स रूप हैं। यहाँ उन्होंने (फंतासी शैली) को प्रस्तुत किया है।

"कोठे के साँवले गुहान्धकार में
मजबूत ... ... सन्दूक
दृढ़, भारी-भरकम
और उस सन्दूक भीतर कोई बन्द है
यक्ष
या कि ओरांग उटांग हाय

अरे ! यह डर है ..."

इस युग के प्रमुख कवियों में अज्ञेय, मुक्तिबोध, भारतभूषण अग्रवाल, नेमिचंद जैन, गिरीजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, भवानी प्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, रामविलास शर्मा, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, समशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती आदि कवि आते है।

नयी कविता : 'नयी कविता' का आरंभ १९५४ से माना जाता है। आदिकाल से लेकर नयी कविता के वर्तमान समय तक, यह प्रदीर्घ और विशालकालीन समय, हिंदी काव्य यात्रा को विकास के साथ-साथ अभिनव और नूतन तथा नवनीत विचारों, विशेषताओं को लेकर चलता रहा है। वर्तमान के नव संदर्भो को प्रस्तुत करनेवाली यह कविताएँ 'नयी कविता' कहलाती है। जहाँ नये विशेषण को चुना है और वर्तमान जीवन की जटीलता, संघर्ष आदि को इन कविताओं ने नव संस्कारमयी शब्दावली के माध्यम से नये दृष्टिकोण, नये विचारों के साथ विश्व को एक नये दृष्टि से देखा, आका और परखा गया है। प्रयोगवाद के पश्चात तीसरे 'तारसप्तक' (१९५४) के प्रकाशन से आधुनिक हिंदी साहित्य में कविता का यह नया रूप प्रस्तुत हुआ है, जिसे 'नयी कविता' या 'साठोत्तरी हिंदी कविता' की संज्ञा प्राप्त हुई। इससे पूर्व इसे अकविता, अस्वीकृत कविता, प्रसिद्ध कविता, न कविता, भूखी पीढ़ी की कविता आदि अनेक नामों से और पड़ाओं से गुजरना पड़ा। पर अंतत: यह वर्तमान में अस्पष्टता के घेरे से निकलकर 'नयी कविता' के नाम से पहचाने जाने लगी।

'नयी कविता' यह वर्तमान मानवजीवन का यथार्थ प्रतिबिंब रूप है, जिसका मानविय जीवन से एक नया रागात्मकता का संबंध स्थापित हुआ है। क्योंकि 'नयी कविता' का केंद्रबिंदू ही मानव है। इसलिए यह कवि मानव की, उसके विश्व की, उसके जीवन की नयी स्थापना करना चाहते हैं, जो समाज की कुरीतियों, खोकली परंपराओं, रूढ़ियों के प्रति तीव्र विरोध कर एक स्वस्थ समाज का, सामाजिक तत्वों का नया रूप प्रस्तुत करता नज़र आता है। यह कवि मानव जीवन को नये रूप में तलाशने की चेष्टा करता है। इन कवियों ने प्राचीन संदर्भों को एक नया दृष्टिकोण दिया है। जैसे की धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' का उदारहण यहाँ प्रस्तुत है —

"जब कोई भी मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को,
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है।
नियति नहीं पूर्व निर्धारित,
उसको हर क्षण मानव निर्णय बनाता-मिटाता है।"

ये कवि कविता के माध्यम से मानवजीवन के एक क्षण के सत्य पर विश्वास करता है। सत्य से शाश्वत सत्य का बोध कराता है, साथ ही जीवन के एक-एक क्षण को महत्वपूर्ण बताकर, मानवहानी या जीवनहानी का 'महाभारत' के संदर्भ की घटना को स्मरण कराकर, उसे नये दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर मानव जीवन की मौलिकता को प्रस्तुत करता है। उनका मानना है की अपना भाग्य मानव स्वयं बनाता है।

'नयी कविता' का कवि सुख-दु:ख एवं पीड़ाओं को सहजता के साथ जीने का अभिलाषी है। वह मनुष्य के साथ जुड़ाव और समाज के प्रति जागरूकता भी रखता है। यहाँ तक की वह नैतिकता को भी चुनौती देता है। कुछ विद्वानों या आलोचको का मानना है की नयी कविता में कोई रस है, ना साधारीकरण की मात्रा, इनकी कविताएँ रसविहीन होती है। इनके यह विचार गलत साबित हो सकते है जैसे के रसभाव से भरपूर मात्रावाली कविता, जो भवानी प्रसाद मिश्र की 'गीत-फरोश' का एक सुंदर उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है -

"जी हाँ, हूजूर मैं गीत बेचता हूँ
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ
सभी किस्म के गीत बेचता हूँ।

नयी कविता की विशेषताओं को देखते हुए यह कह सकते है की यह कवि मानव जीवन की जिजीविषा की दृष्टि रखता है। नयी अभिव्यक्ति के लिए नये विषय, नये प्रयोग, सरल, सहज, सुबोध भाषा का प्रयोग और उसमें प्रयुक्त मुहावरे, कहावते, नया शिल्प, नये प्रतीक, नये बिंब, नये शब्द, नये अर्थ, नयी कल्पना, नया भावपक्ष, नवबुद्धि इन सभी काव्य के तत्वों के माध्यम के अनुरूप ही एक 'नयी कविता' का जन्म इस कालखंड में हुआ है, जो आज वर्तमान में भी स्थित है, और आगे भी स्थित रहेगी। शायद अनंतकाल तक, सृष्टि के अंत तक, पर तब तक न जाने इस हिंदी काव्य यात्रा के पड़ाव में ना जाने कितने नये-नये परिवर्तन और नये मोड़ और स्वरूप जुड़ते रहेंगे।

१.४ आधुनिक हिंदी काव्य की प्रवृत्तियाँ

जैसे के आधुनिक काल को अनेक पड़ाव में विभाजन कर उन्हें भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, हालावाद, प्रयोगवाद, नयी कविता आदि अनेक नामें में बाँटा गया। इन सभी की अनेक प्रवृत्तियों को देखते हुए, उनमें से जो विशेष प्रवृत्तियाँ है, उन्हीं को यहाँ 'आधुनिक काव्य की प्रवृत्तियों' के रूप में रखा गया है, जो निम्न रूप से प्रस्तुत है।

देशभक्ति/ राष्ट्रप्रेम की प्रधानता यह प्रवृत्ति भारतेंदु काल, द्विवेदी काल तथा छायावादी काल में प्रमुख रूप से देखने को मिलती है। आधुनिक काल के आरंभ में अर्थात भारतेन्दु युग की हिंदी कविता में देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम विशेष रूप से एकत्र चलते रहे है। इस काल के कवियों ने कविताओं के माध्यम से विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तो किया ही साथ ही देश के अतीत के गुणगान का स्वर भी उसमें दिखाई देता है। यह कवि देश के लिए जनजागृति करते रहें। इस दृष्टि से इस काल की कविताओं में देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम दोनों का स्वर दिखाई देते है। जैसे की भारतेन्दु अँग्रेजी शासन के प्रति रोष व्यक्त करते है - "अंग्रेज राज सुख साज सब भारी। पै धन विदेश चलि जात यहौ अति ख्वारी।" साथ ही द्विवेदी काल और छायावाद में राष्ट्रीयता के स्वर प्रखर रूप से उभरे है। छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने एक से बढ़कर एक गीत लिखे है। वे राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति के स्वर में कहते है

"अरूण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।"

या फिर..

"हिमाद्री तुंगश्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती..."

प्राचीनता तथा नवीनता का समन्वय यह प्रवृत्ति भारतेंदु, द्विवेदी और छायावादी काल में विशेष रूप से पाई गई है। इन कवियों की कविताओं में जहाँ देशप्रेम तथा समाज सुधार जैसे नवीन विषयों का समावेश हुआ वहीं भाषा, भाव, छंद की दृष्टि से यह युग सामंजस्य का युग है। इन कवियों ने भक्तिकालीन भक्त कवियों की तरह पद भी लिखे, लीलागान भी किया। तो दूसरी ओर रीतिकालीन कवियों के समान नायिका भेद, नखशिख वर्णन भी किया। इन कवियों में प्राचीनता के प्रति मोह और नवीनता के प्रति आकर्षण दिखाई देता है। जनजीवन का चित्रण यह प्रवृत्ति भारतेंदुकाल से लेकर अकविता, नयी कविता तक यह प्रवृत्ति देखी जा सकती है। रीतिकालीन कवि दरबारी होने के कारण जनसामान्य से उनका काव्य कोसों दूर था। जबकि भारतेन्दु युग का काव्य जन-जीवन से जुड़ा हुआ था। तो द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता के कवियों के काव्यों में जनवादी प्रवृत्ति समाज सुधार में निहित है। जिसमें मानवता का संदेश तथा एकता, समानता, सहिष्णुता, सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक मिथ्याचार, छल, कपट, पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगे शिक्षित वर्ग पर व्यंग्य, पुलिस, अकाल, महामारी, बेरोगारी, अंग्रेजों का शोषण, जातिवाद, अस्पृश्यता आदि को विरोधकर सामान्य जन को प्रेरित कर जनजगृति जैसा मौलिक कार्य कविता के माध्यम से इन कवियों ने किया है। प्रकृतिचित्रण यह प्रवृत्ति भारतेंदु, द्विवेदी, छायावाद इन युगों की कविताओं में प्रकृति का सजीवन चित्रण हुआ है। अधिकतर छायावादी कवि प्रकृति प्रेमी थे। छायावादी कवियों में सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति का 'चित्तेरी कवि' कहा गया है। वे प्रकृतिक के गोंद में पले-बड़े कवि है। इससे पूर्व परंपरायुक्त प्रकृतिका चित्रण हुआ करता था जिसका उद्देश्य केवल श्रृंगारभावना को उद्दीप्त करना था। परंतु इस युग के कवियों ने प्रकृति से सच्चा प्रेम किया। श्रीधर पाठक जैसे कवि प्रकृति-प्रेम में तन्मय होकर उसकी माधुरी का वर्णन करते है -

"प्रकृति यहाँ एकांल बैठि निज रूप सँवारती
पल-पल पलटति भेष छनिक छवि छिन-छिन आरति।"

व्यक्तिवाद की प्रधानता यह प्रवृत्ति छायावादी युग से लेकर नयी कविता के कवियों में आधुनिक युग का प्रतिद्वन्द्वात्मक व्यवस्था, पूँजीवादीता के परिणामस्वरूप व्यक्तिवाद का जन्म हुआ। जिसमें मध्ययुगीन अवशेषो से युक्त भारतीय समाज और व्यक्ति के बीच व्यवधान और विरोध को वाणी मिली है। जिसके कारण वैयक्तिक भावनाओं का विकास हुआ। वैयक्तिक चिंतन का क्षेत्र बढ़ने लगा। जिससे कविता अंतर्मुखी हो गई। कवि के अंह में निबद्ध हो गई। कवि संपूर्ण जगत को 'अहं' भावना के काँटे पर तौलने लगा। छायावादी और हालावादी कवियों में जैसे के महादेवी वर्मा, निराला, डॉ. हरीवंशराय बच्चन के काव्य में भी 'अहं' जागृत है। भगवतीचरण वर्मा के तो क्या ही कहने, वे कहते है -

"हम दीवानों की क्या हस्ती है आज यहाँ कल वहाँ चले।
मस्ती का आलम साथ चला हम धूल उडाते जहाँ चले।"

तो वहीं कविवर हरिवंशराय बच्चन जी कहते है -

"कितना अकेला आज मैं, संघर्ष में टूटा हुआ।
दुर्भाग्य से लुटा हुआ, परविार से छुटा हुआ।
किंतु अकेला आज मैं।"

रहस्यवादी भावना यह प्रवृत्ति छायावादी कवियों में रहस्यवाद भाव का चित्रण अधिक रूप में देखने को मिलता है। जिसमें पंत, प्रसाद, निराला और महादेवी वर्मा आदि महत्वपूर्ण है। निराला तत्वज्ञान के कारण तो पंत प्राकृतिक सौंदर्य से रहस्योन्मुख हुए, तो प्रेम और वेदना ने महादेवी वर्मा को रहस्योन्मुख किया, वहीं प्रसाद ने उस परमसत्ता को खोजा। रहस्यवादी कवि लौकिकता से अलौकिक और स्थूल से सूक्ष्मता की ओर अग्रसर होते है। इन कवियों के रहस्यवाद भावना दादू दयाल और कबीर जैसी नहीं थी। यहाँ महादेवी का रहस्यवाद भाव प्रस्तुत है -

"पिय चिरन्तन है सजनि
क्षण-क्षण नवीन सुहागिनी मैं,
तुम-मुझमें फिर परिचय क्या।"

नारी सौंदर्य एवं प्रेम का चित्रण (नखशिख वर्णन) यह प्रवृत्ति छायावाद के कवियों ने नारी के सौंदर्य एवं प्रेम का सजीव चित्रण किया है। जिसमें नारी रूप का सूक्ष्मता से वर्णन कर उसके सौंदर्य रूप को अत्यंत ही सुंदरता से प्रस्तुत किया है। प्रसाद की कविताओं मे जैसा नारी सौदर्य वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है वे कहते है -

"तु कनक-किरन के अंतराल में
लुक छिपकर चलते हो क्यों?
नत मस्तक गर्व वहन भरते
यौवन के घन रसकन ठरते।"

स्वछंतावादी होने के नाते इन कवियों ने कभी प्रेम के क्षेत्र में जाति, वर्ण, सामाजिक रीजि-नीति, रूढ़ियों और मिथ्या मान्यताएँ नहीं मानी। निराला लिखते है -

"दोनों हम भिन्न वर्ण, भिन्न जाति, भिन्न रूप।
भिन्न धर्म भाव, पर केवल अपनाव से प्राणों से एक थे।"

यहाँ प्रेम के अंतर्गत कवि की वैयक्तिकता देखने को मिलती है। प्रेमचित्रण में संयोग की अपेक्षा वियोग/ विरह भाव को इन कवियों ने अधिक चित्रित किया है। स्वच्छंदतावाद यह प्रवृत्ति छायावादी कवि अंहवादी होने के कारण विषय, भाव, कला, धर्म, दर्शन और समाज सभी क्षेत्रों में स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्ति को उन्होंने अपनाया था। उन्हें अपने हृदय के भाव को व्यक्त करने के लिए किसी प्रकार का शास्त्रीय बंधन और रूढ़ियाँ स्वीकार नहीं थे। इन कवियों ने 'मैं' की शैली अपनाई। जिसमें समूचा समाज समाहित है। इन के काव्य का प्रत्येक क्षेत्र उन्मुक्त था। इसी स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति के कारण छायावादी काव्य में सौंदर्य और प्रेम चित्रण,

प्रकृति चित्रण, राष्ट्रप्रेम, रहस्यात्मकता, वेदना और निराशा वैयक्तिक सुख-दु:ख, अतीत-प्रेम, कलावाद, प्रतीकात्मकता, लाक्षणिकता, अभिव्यंजना आदि प्रवृत्तियाँ मिलती है।

मानवतावाद के स्वर यह प्रवृत्ति विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टौगोर, महर्षि अरवींद, रामकृष्ण परमहंस जैसे महान व्यक्तियों के दर्शन का प्रभाव इन कवियों पर रहा। जिसके कारण इन कवियों ने धर्म, दर्शन आदि के क्षेत्र में भी रूढ़िया और परम्पराओं को अमान्य किया है। जिस तरह रवीन्द्रनाथ टैगोर बंगला साहित्य में जाति एवं वर्गगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर विश्वमानवता का जयघोष करते है, ठीक वैसे ही इन कवियों में भी मानवतावाद का स्वर देखने को मिलता है। वह युग-युग से उपेक्षित नारी को सदियों की कारा से मुक्त करने का स्वर अलापते है। जहाँ रीतिकाल में नारी को केवल उपभोग की दृष्टि से देखा गया, तो वहीं यह छायावादी, प्रगतिवादी, प्रयोगवादी कवि नारी के तन को नहीं उसके मन को देखते है। यहाँ कवि कहता है - "मुक्त करो नारी को, युग-युग की कारा से बंदिनी नारी को।" इसी प्रकार से अर्थ लेकर चलने वाली यह पंक्तियाँ प्रस्तुत है -

"नष्ट हो गई इसकी आत्मा,
त्वचा रह गई पावन
युग-युग से अवगुंठित गृहिणी,
सहती पशु के बंधन
खोलो हे मेखला युगों की,
काटे प्रदेश से, तन से
अमर प्रेम हो उसका बन्धन
वह पवित्र हो मन से - "

यह कवि केवल नारी की ही बात नहीं करते वे समस्त संसार में, विश्वमानवता की बात करते है। जिसमें शोषित, पीड़ित, किसान और श्रमिकवर्ग के प्रति सहानुभूति देखने को मिलती है। शोषित और शोषकवर्ग का चित्रण यह प्रवृत्ति प्रगतिवादी कविता का मूल स्वर ही शोषित और शोषक की यथार्थस्थिति का वर्णन रहा है। यह कवि इन्हें दो वर्गों में बाँटकर उसे अभिव्यकित करते है। एक ओर शोषकवर्ग (श्रमिकवर्ग) तो दूसरी और शोषित (पूँजीपति वर्ग) का चित्रण करते है। कृषक, मजदूर, नारी उनके प्रति सहानुभूति तो शोषक वर्ग के प्रति घृणा, वितृष्णा, व्यंग्य आदि की अभिव्यक्ति इनके काव्य में हुई है। मजदूर सुख के सब उपकरणों का सृष्टा है पर वह स्वयं उससे वंचित है, वह अन्नदाता है, पर भूखा है। भारत का 'दरिद्र नारायण' मजदूर, किसान और श्रमिक वर्ग है। किसान और मजदूर के शस्त्र जैसे के हंसीये और हतौड़े को एक होने पर उसकी शक्ति बढ़ जाती है। उसी शक्ति के महत्व को प्रस्तुत कर उनकी शक्ति को बढ़ावा देते हुए कहा गया है-

"ओ मजदूर ! ओ मजदूर !!
तू सब चीजों का कर्ता, तू ही सब चिजों से दूर,
ओ मजदूर ! ओ मजदूर !!

xxxx

इस खलकत का खालिक तू है,
तू चाहे तो पल में कर दें
इस दुनियाँ को चकनाचूर,
ओ मजदूर ! ओ मजदूर !!

रूढ़ि-विरोध यह प्रवृत्ति प्रगतिवादी ईश्वर की सत्ता को नकार कर मानव की सत्ता पर विश्वास करते है। यह लोग ईश्वर की सत्ता, आत्मा, परलोक, भाग्यवाद, धर्म, स्वर्ग, नरक आदि पर विश्वास नहीं करते। उनकी दृष्टि में मानव की महत्ता ही सर्वोपरि है। ये लोग मंदिर-मस्जिद, गीता-कुरआन पर विश्वास नहीं रखते वे अंधविश्वास, मिथ्या परंपराओं को न मानते हुए उनका कड़ा विरोध करते है। केवल मानव को मानवरूप में देखना चाहते है -

"किसी को आर्य, अनार्य,
किसी को यवन,
किसी को हूण-यहूदी-द्रविड़
किसी को शीश
किसी को चरण
मनुज को मनजु न कहना आह !"

प्रतिकात्मकता यह प्रवृत्ति प्रयोगवादी काव्य धारा अधिकतर प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत हुई है। दमित इच्छओं एवं वर्जनाओं की अभिव्यक्ति को प्रतीक रूप में ढ़ाला गया। अनेक कवियों ने अलग-अलग नवीन प्रतीको के प्रयोग किए जिसे देखकर प्रगतिवाद को 'प्रतीकवाद' के नाम से भी पुकारा जाने लगा। नवीन प्रतीक तो कुछ इस तरह प्रस्तुत हुए है।

"मेरे सपने इस तरह टूट गए
जैसे भुंजा हुआ पापड़।"

हालावादी कविता में प्रतीकों का सुंदर प्रयोग हुआ है। हाला से जुड़े हुए अन्य उपकरणों को भी प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया। हाला से जुड़े हुए उपकरण तीन है — पहला (१) प्याला, मधुशाला और मधुबाला, इन तीनों रूपों को जग और जीवन की क्षणभंगुरता के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है। दूसरा (२) यौवन, मस्ती और हस्ती के प्रतीक रूप में और तिसरा (३) सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक पाखण्डों के प्रतीक रूप में प्रस्तुत हुए है।

नया कला पक्ष - नया शिल्प विधान आदि यह प्रवृत्ति नयी कविता में प्रतीक व बिंब विधान को छोड़कर सपाट बयानी पर अधिक बल दिया गया है। इन कवियों की भाषा अनुभव के निकट की है। जो सपाट, खुरदुरी व कड़ी हो जाती है। उनकी अभिव्यक्ति में बेलैस और निर्ममता देखी जाती है जो निसंकोच और बेझिझक पाई गई है। जैसे के -

"न कोई छोटा है न कोई बड़ा है,
मेरे लिए हर एक आदमी एक जोड़ी जूता है,
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।"

मार्क्सवादी / साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित यह प्रवृत्ति प्रगतिवाद युग के कवि साम्यवाद के प्रवर्तक मार्क्स तथा रूस के विचारधारा से प्रभावित होने के कारण दोनों के विचारों का उन्मुक्त गान वह अपनी कविताओं के माध्यम से करते है। नरेन्द्र शर्मा का लाल रूस का गुणगान यहाँ दृष्टव्य है -

"लाल रूस है ढ़ाल साथियों ! सब मजूदर किसानों की,
वहां राज है, पंचायत का, वहां नहीं है बेकारी।
लाल रूस का दुश्मन साथी ! दुश्मन सब इंसानों का।
दुश्मन है सब मजदूरों का, दुश्मन सभी किसानों का।

अति बौद्धिकता और व्यंग्य तथा मोहभंग का चित्रण यह प्रवृत्ति द्विवेदी युग से ही काव्य साहित्य में बौद्धिकता का समावेश हुआ है। वास्तव में यह यन्त्र युग की देन है। वैज्ञानिक दृष्टि के कारण प्राचीन रूढ़ियों एवं मान्यताओं का विरोध तथा विश्लेषण हुआ है। प्रगतिवादी, प्रयोगवादी कवियों ने पूँजीवाद के शोषण की प्रवृत्ति को, आधुनिक राजनीति को, आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को काव्य के माध्यम से व्यंग्यात्म प्रहार कर उन्हें लक्ष्य बनाया हैं। निराला की 'कुकुरमुत्ता' और 'नये पत्ते' में पूँजीपति वर्ग/ शोषक वर्ग पर तीव्र व्यंग्य किया गया है। नागार्जुन ने आज के जर्जर समाज और आज़ादी का वैषम्य दिखाते हुए बड़ा नुकीला व्यंग्य किया है, जहाँ मोहभंग का चित्रण देखने को मिलता है। यह आज़ादी कागजी स्कीमों के अतिरिक्त कुछ नहीं है, वे कहते है -

"कागज की आज़ादी मिलती
ले लो दो-दो आने में।"

शैली-शिल्प की नवीनता / शब्दचयन / छंद योजना ध्वन्यात्मकता यह प्रवृत्ति प्रयोगवादी अकविता, नयी कविता के कवियों ने शैली-शिल्प, शब्दचयन तथा छंद योजना में नवीन प्रयोग किए। कविता के लिए शब्दों का चयन विज्ञान, दर्शन, भूगोल, मनोविश्लेषणशास्त्र एवं मनोविज्ञान, ग्रामीण बोली, बाजारू बोली आदि से ली है। प्रादेशिक शब्दों और हिंदी भाषा के शब्दों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है। जिससे छंद योजना भी अछूती नहीं रही है। इन कवियों ने कहीं-कहीं लोकगीतों की धुन पर गीत गढ़े है, कहीं-कहीं मुक्तक छंदों में लय और स्वर देखने को मिलते है। इन कवियों की कविताओं में ध्वन्यात्मकता की प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है। जैसे की अज्ञेय की कविता में ओस की टिप-टिप, पहाड़ी काक ही 'हाक्-हाक्' आदि। इस तरह हम देखते है कि आधुनिक कालीन कवियों में काव्य के अंतर्गत शैली-शिल्प की नवीनता, नवीन शब्दचयन, नवीन छंद योजना, ध्वन्यात्मकता आदि प्रवृत्ति दिखाई देती है। लंबी कविता यह प्रवृत्ति हिंदी कविताओं में जहां लघु कविताएं लिखी जाती रहीं वहीं लघु की अपेक्षा लंबी कविता ने स्थान ले लिया। आधुनिक हिंदी की लंबी कविता को महाकाव्य या खंडकाव्य की परिधि से समझना चाहीए। महाकाव्यों में समय जीवन जहां विशद है जिसमें संस्कृति, प्रतिबिंब, कलात्मकता का रूप है ऐसी रचनाओं में 'प्रियप्रवास',

'साकेत', 'कामायनी' तथा 'लोकायतन' आदि को महाकाव्य या प्रबंध काव्य कहे जा सकते है। 'पंचवटी', 'यशोधरा' यह खंडकाव्य के अंतर्गत आते है। परंतु प्रतीकात्मकता का प्रयोग करते हुए फैंन्टसी शैली में गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की 'लकड़ी का रावण', 'ब्रह्मराक्षस', 'अंधेरे में', निराला की 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति' आदि सही अर्थों में लंबी कविता/ प्रदीर्घ कविता के अंतर्गत आते है। जहाँ छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नयी कविताओं में यह लंबी कविता की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस' नामक कविता का उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है -

> "अथाह गहरे जल के भीतर दूर तक चली गई सीढ़ियाँ है,
> ब्रहिड़ उजाड़ में बने उँचे-उँचे जीने है, मस्तिष्क के भीतर एक और अवचेतन मस्तिष्क,
> उसके भीरत एक कक्ष,
> कक्ष के अंदर एक गुप्त प्रकोष,
> कोठे के सामने गुहांधकार में मजबूत एक संदूक।"

इस तरह आधुनिक काल की कुछ प्रमुख और विशेष प्रवृत्तियों को यहां रखा गया है।

'मुकरियाँ'

— भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१८५०-१८८५)

जीवन परिचय :

आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक तथा भारतीय नवोत्थान के प्रतीक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने हिंदी साहित्य में मौलीक योगदान दिया है। आपका हिंदी साहित्य विविधतापूर्ण, ओजपूर्ण के साथ-साथ नवीन दृष्टिकोण एवं उनमें व्यापक विषय रहें है। जिसमें पुरातन के प्रति मोह एवं नवीनता के प्रति आकर्षण आपके साहित्य की विशेषता रही है। काव्य रचना की दृष्टि से देखा जाए तो आप एक महान साहित्यिक है। जहाँ एक साहित्यिक संगम की तरह लगभग सभी साहित्यिक धाराएँ मिलकर एक नवीन साहित्य धारा को जन्म देती है, जो फैलते-फैलते जीवन के प्रत्येक कोने को स्पर्श करती नज़र आती है। कवि, नाटककार, पत्रकार, समाजसुधारक, अनुवादक, उपन्यासकार एवं विविध भाषाओं के विद्वान के रूप में आप जाने जाते है। हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बांगला, गुजराती, मारवाड़ी, पंजाबी और उर्दू आदि भाषाओं के आप ज्ञाता थे।

भारतेन्दु जी का मूल नाम 'बाबू हरिश्चन्द्र' है। भारतेन्दु जी के काल में अंग्रेज सरकार द्वारा अच्छे कार्य करनेवालों को (सम्मान सूचक उपाधि) से सम्मानित किया जाता था, जैसे की 'सर', 'रायबहादुर', 'रॉय साहब' ऐसे ख़िताब केवल अंग्रेजों की चापलूसी करनेवालों को दिया करते थें। जिसके कारण अंग्रेज सरकार का ध्यान कभी भारतेन्दु की ओर नहीं गया। तब १८८० में पं. रघुनाथ, पं. सुधाकर द्विवेदी, पं. रामेश्वर दत्त व्यास आदि हिंदी साहित्यकारों के प्रस्ताव से 'भारतेन्दु' की उपाधि से आपको विभूषित किया गया। 'भारतेन्दु' अर्थात 'भारत का इन्दु' याने 'चंद्रमा'। हिंदी साहित्य में चंद्रमा की तरह शितलता के साथ ज्ञान का प्रकाश देने वाले साहित्यकार के रूप में भारतेन्दु जी की पहचान है जो सचमूच में भारत के 'चंद्रमा' थे।

भारतेन्दु जी की काव्य रचनाएँ : "प्रेमसरोवर, प्रेममाधुरी, प्रेमतरंग, प्रेम फुलवारी, भक्तमाल, होली, नये जमाने की मुकरी"

नाटक : "विद्यासुंदर, सत्य हरिश्चन्द्र, भारत दुर्दशा, नीलदेवी, अंधेर नगरी"

पत्रिकाएँ : "कविवचनसुधा, हरिश्चन्द्र-चंद्रिका, बालबोधिनी"

कविता की मूल संवेदना :

'मुकरियाँ' यह एक लोकप्रचलित पहेलियों का एक रूप है, जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ बुद्धिचातुर्य की परीक्षा लेना होता है। इसमें जो बातें कही जाती है, वह द्वैअर्थक होती है। पर उन दोनों अर्थों में से जो प्रधान होता है, उससे मुकरकर दूसरे अर्थ को उसी छंद में स्वीकार किया जाता है, किन्तु यह स्वीकारोक्ति वास्तविक नहीं होती। हिंदी में अमीर खुसरो ने इस लोक काव्य रूप को साहित्यिक रूप दिया। प्रस्तुत अर्थ को अस्वीकार कर अप्रस्तुत को स्थापित किए जाने के कारण अलंकार की दृष्टि से इसे छेकापहनुति भी कहा जाता है।

' मुकरियाँ '

सब गुरुजन को बुरो बतावै।
अपनी खिचड़ी अलग पकावै॥
भीतर तत्व न झूठी तेजी।
क्यों सखि सज्जन नहिं अँगरेजी॥ १॥

सुंदर बानी कहि समुझावै ।
बिधवागन सों नेह बढ़ावै॥
दयानिधान परम गुन-आगर ।
क्यों सखि सज्जन नहिं विद्यासागर ॥ २ ॥

तीन बुलाए तेरह आवैं।
निज निज बिपता रोइ सुनावैं॥
आँखौ फूटे भरा न पेट।
क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रैजुएट ॥ ३ ॥

रूप दिखावत सरबस लूटै।
फंदे मैं जो पड़ै न छूटैं॥
कपट कटारी जिय मैं हुलिस।
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि पुलिस ॥ ४॥

भीतर-भीतर सब रस चूसै।
हँसि-हँसि कै तन-मन-धन मूसै॥
जाहिर बातन मैं अति तेज।
क्यों सखि सज्जन नहिं अँगरेज ॥ ५ ॥

सतएँ-अठएँ मों घर आवैं।
तरह-तरह की बात सुनावैं॥
घर बैठा ही जोड़ै तार।
क्यों सखि सज्जन नहिं अखबार ॥ ६ ॥

एक गरभ में सौं-सौं पूत।
जनमावै ऐसा मजबूत ॥
करैं खटाखट काम सयाना।
क्यों सखि सज्जन नहिं छापखाना ॥ ७॥

मुँह जब लागै तब नहिं छूटै।
जाति मान धन सब कुछ लूटै॥
पागल करि मोहिं करे खराब।
क्यों सखि सज्जन नहिं सराब ॥ ८ ॥

मतलब ही की बोलै बात।
राखै सदा काम की घात॥
डोले पहिने सुन्दर समला।
क्यों सखि सज्जन नहिं सखि अमला ॥ ९॥

नयी-नयी नित तान सुनावै।
अपने जाल मैं जगत फँसावै॥
नित-नित हमैं करै बल-सून।
क्यों सखि सज्जन नहिं कानून॥ १०॥

कठिन शब्दों के अर्थ :

- विद्यासागर = पंडित (विद्वान);
- कपट कटारी = पोलिस का हत्यार;
- हूलिस = लालच;
- सराब = शराब;
- अमला = नेता;
- चुंगी = टैक्स (कर);
- घात = नज़र बनाए रखना/ विश्वासघात।

'बीती विभावरी जाग री'

- जयशंकर प्रसाद

परिचय :

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल के अंतर्गत छायावादी काव्यधारा के श्रीगणेशकर्ता जयशंकर प्रसाद एक प्रमुख कवि है। आपका जन्म ३० जनवरी १८९० को उत्तर प्रदेश के वाराणसी में सुँघनी साहू परिवार में हुआ और मृत्यु १६ नवम्बर १९३७ में वाराणसी में ही हुई। प्रसादजी के पिता का नाम देवी प्रसाद था, जो तंबाकू का व्यवसाय किया करते थे। बचपन से ही अपने पिता के साथ प्रसादजी ने अनेक तीर्थ स्थलों की यात्राएँ की है। आपकी पढ़ाई अधिकर स्कुल की अपेक्षा घर पर ही हुई है। आपके गुरू का नाम सोहिनीलालजी हरसमई सिद्ध था। १२ वर्ष की अवस्था में ही आपके पिताजी का देहांत हो गया और १५ वर्ष की आयु में माता की भी छत्रछाया से वंचित हो गए। १७ वर्ष की अवस्था में बड़े भाई की मृत्यु हो गई। परिवारिक जिम्मेदारी के कारण २० वर्ष की आयु में आपका पहला विवाह हुआ, कुछ ही दिनों में पहली पत्नी की मृत्यु होने के कारण आपने दूसरा विवाह किया। दूसरी पत्नी की मृत्यु के होने बाद आपको तीसरा विवाह करना पड़ा। जिनसे आपको 'रत्नशंकर' नामक बेटा प्राप्त हुआ।

जयशंकर प्रसाद का मूल नाम 'झारखंडी' था। आपने ९ वर्ष की अवस्था से ही 'कलाधर' उपनाम से कविता लिखना प्रारंभ किया था। आपकी प्रथम कहानी 'ग्राम' १९११ में इंदू पत्रिका में प्रकाशित हुई तथा 'सालवती' नामक अंतिम कहानी १९३५ में प्रकाशित हुई। जयशंकर प्रसाद एक उच्च कोटी के कवि होने के साथ- साथ एक उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार के रूप में विख्यात है। प्रसादजी आरंभिक काल में ब्रजभाषा में कविता लिखा करते थे किंतु १९१३-१४ से आपने खड़ीबोली में लिखना आरंभ किया। १९१२ में आपकी रचना 'झरना' प्रकाशित हुई और छायावादी काव्यधारा की प्रवृत्तियाँ सबसे पहले इसी रचना में दिखाई देती है। आपकी अंतिम रचना 'कामायनी' यह हिंदी साहित्य जगत का श्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। जिसकी चार पक्तियाँ मनुष्य के विडम्बन भरे जीवन का चित्रण करती है —

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की।"

प्रसादजी ने अपनी रचनाओं में भारतीय इतिहास एंव संस्कृति के गौरवशाली अतीत को नयी चेतना के साथ प्रस्तुत किया है। जिस में भारत का गौरवगान, अतीत के प्रति प्रेम, नारी स्वतंत्रता, पराधीनता से मुक्ति, प्रेम की मौलिकता, राष्ट्रप्रेम, करूणा, भावात्मक्ता, चित्रात्मक्ता, प्रकृतिवर्णन, रहस्यवाद, प्रतीकात्मक्ता, व्यक्तिवाद, लाक्षणिकता आदि उनके काव्य की विशेषताएँ है। आपकी भाषा में संस्कृतनिष्ठित तत्सम हिंदी का प्रयोग हुआ हैं।

रचनाएँ :

काव्यसंग्रह : कानन-कुसुम, महाराणा का महत्व, प्रेम पथिक, करूणालय, झरना, आँसू, लहर, कामायनी (महाकाव्य) आदि प्रसिद्ध काव्य रचना है।

कहानी संग्रह : छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी, इंद्रजाल यह पाँच कहानी संग्रह है।

उपन्यास : कंकाल, तितली, इरावती यह तीन चर्चित उपन्यास है। इरावती अधूरा उपन्यास है।

नाटक : स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु, विशाख, राज्यश्री, एक घूंट आदि मौलिक नाटक है।

कविता की मूल संवेदना :

'बीती विभावरी जाग री' शीर्षक कविता 'लहर' काव्य संग्रह से ली गई है। जिसका प्रकाशन १९३५ में हुआ था। यह कविता भोर काल के सौंदर्य पर रचित एक कोमल रागात्मक कविता है, जिसमें कवि ने प्रकृति का सुंदर मानवीकरण किया है। कविता में प्रकृति चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण के लिए भी उद्बोधन किया गया है। जिसमें कवि ने मानविकरण में यमक, रूपक और अनुप्रास अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। कविता में कवि युवती के माध्यम से भोर के समय वह अपनी सोयी हुई सखी को जगाते हुए कहती है - रात बीत चुकी है, सुबह होने को हैं और तुम अभी तक सो रही हो, अब तो जाग जाओं। यहा दो अर्थो में कविता का भावार्थ लिया जा सकता हैं एक प्राकृतिक चित्रण रूप से तो दूसरा राष्ट्रीय जागरण के रूप से अभिव्यक्त भाव प्रस्तुत हुए हैं।

'बीती विभावरी जाग री'

अम्बर पनघट में डूबो रही तारा — घट उषा नागरी।
खग — कुल — कुल — कुल सा बोल रहा,
किस लय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर आई।
मधु मुकुल नवल रस गागरी
अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज बन्द किये
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री।

कठिन शब्द के अर्थ :

विभावरी = रात	अंबर = आकाश	पनघट = पानी भरने का घाट	घट = घड़ा
उषा = प्रात:काल	खग = पंछी	लतिका = छोटी लता, छोटी बेल	नागरी = सुंदर स्त्री
आली = सखी	अलक = सुंदर केश	मलयज = सुंगधित चंदन	विहाग = रात्री का अंतिम पहर।

' भिक्षुक '

- सुर्यकान्त त्रिपाठी - निराला

परिचय :

सुर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म १९११ ई. में पश्चिम बंगाल के मेदिनपुर जिले के महिषादल ग्राम में हुआ, तथा आपकी मृत्यु १५ अक्तुबर १९६१ में इलाहाबाद में हुई। निरालाजी का जन्म रविवार को हुआ था इसलिए आपका नाम 'सुर्यकान्त' रखा गया। मैट्रिक तक की शिक्षा बंगला भाषा में की तदुपरान्त स्वाध्याय से संस्कृत, अँग्रेजी, बंगला, साहित्य के साथ दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। पत्नी मनोहरादेवी के प्रभाव से हिंदी की ओर आपका झुकाव रहा। कलकत्ता से 'समन्वय' और 'मतवाला' पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य किया। १९४९ ई. में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'अपरा' काव्यसंग्रह पर पुरस्कार प्राप्त हैं। १९३५ तक लखनऊ से प्रकाशित 'सुधा' पत्रिका से जुड़े रहे। १९४० में प्रयाग में स्थायी रूप से निवास रहा। आपको 'महाप्राण निराला' के रूप में ख्याति प्राप्त है। आप छायावादी कवियों के चार स्तंभ में से एक माने जाते है। मुक्तक छंद के जनक के रूप में भी आपको जाना जाता है। आपने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे है, किंतु उनकी ख्याति कवि विशेष के रूप में रही। १९४२ से मृत्युपूर्व आपने इलहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन कार्य किया।

रचनाएँ :

कविता : अनामिका, तुलसीदास, गीतिका, परिमल, आराधना, अपरा, सांध्यकाकली।

असंकलित कविताएँ : कुकुरमुत्ता और वह तोड़ती पत्थर — यह उनकी मार्क्सवादी कविताओं के अंतर्गत आते है।

कविता की मूल संवेदना :

निराला जी की 'भिक्षुक' यह कविता उनके चर्चित काव्यसंग्रह 'परिमल' से ली गई है। इस कविता में मानवतावादी दृष्टिकोण व्यक्त होता है। जिसमें निरालाजी ने उपेक्षित वर्ग के प्रति अपनी करूणा समर्पित की है। जिन्हें समाज व्यक्ति मानने की भी इच्छा नहीं रखता ऐसे उपेक्षित व्यक्ति की व्यथा को उजागर करते है। जहाँ वे भिक्षुक को आता देखकर उसकी दयनीयदशा से कवि के हृदय के जैसे टुकड़े होने लगते है। वह स्वयं अपनी करूणा जनक स्थिति से सभी को हार्दिक वेदना से भर देते है। कारण यह है की, भिक्षुक इतना दुर्बल है कि उसका पेट और पीठ पिचककर एक से प्रतीत होते हैं। इस कविता के माध्यम से कवि अपना अंतर्निहित संदेश देते हैं कि वे भिक्षुक को अभिमन्यु के समान अपने अधिकारों से लड़ने की प्रेरणा देते हैं। जीवन एक संघर्ष के समान है, जिसे कवि अग्निपथ की तरह मानता है। इस मार्ग पर आत्मविश्वास के साथ चुनौतियों का सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। यहाँ भिक्षुक का यथार्थ चित्रण पुरी संवेदना के साथ प्रस्तुत है। कवि का मानवतावादी स्वर उभरता है। सामाजिक विषमता पर कवि करारा व्यंग्य करता है।

' भिक्षुक '

वह आता-
दो टूक कलेजे को करता, पछताता
पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को- भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता-
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढ़ाए।

भूख से सूखे ओठ जब जाते
दाता-भाग्य विधाता से क्या पाते ?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए !

ठहरो ! अहो मेरे हृदय में है अमृत, मैं सींच दूँगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

कठिन शब्द के अर्थ :

- दो टूक = दो तुकड़े;
- कलेजा = हृदय/साहस/ हिम्मत;
- भाग्यविधाता = भगवान;
- अमृत = जीवनदान देने वाला पेय;
- अभिमन्यु = स्वाभिमानी/ जोशीला/ गौरवशाली/ अर्जुन पुत्र।

'रोटी और संसद'

- सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

परिचय :

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' का जन्म ०९ नवम्बर १९३६ को उत्तरप्रदेश में 'खेवली' नामक गाँव में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ। आपकी आरंभिक शिक्षा-दीक्षा गाँव में ही हुई। तेरह वर्ष की अल्पायु में आपका विवाह संपन्न हुआ। साठोत्तरी कविता में 'धूमिल' का उदय एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में हुआ। आप नयी कविता और अकविता के माध्यम से मजदूर और किसानों के मसिहा के रूप में अवतरित हुए। जिसमें मजदूरों और किसानों, युवा पीढ़ी, भूखमरी का आक्रोश प्रबलरूप से प्रगट हुआ है। आपने कविता के अलावा कहानियाँ, निबंध, डायरी, संस्मरण, पत्र तथा अनुवाद, नाट्यलेखन आदि लिखे। जिससे आपका व्यक्तित्व और कृतित्व निखर कर आता है। आपके दो काव्य संग्रह प्रकाशित है 'संसद से सड़क तक' और 'कल सुनना मुझे'। आपके मरणोपरान्त सुदामा पांण्डे का 'प्रजातंत्र' प्रकाशित हुआ। 'कल सुनना मुझे' काव्य संग्रह पर १९७९ में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'धूमिल' का ३९ वर्ष की अल्पायु में ब्रेन ट्यूमर के कारण १० फरवरी १९७५ को उत्तरप्रदेश के लखनऊ में निधन हुआ। 'धूमिल' की रचनाओं में अधिकतर ग्रामीण परिवेश का चित्रण दिखाई देता है तथा कविताओं के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्था पर तिखा व्यंग्य रूपी प्रहार करते दृष्टिगोचर होते है।

'रोटी और संसद' कविता की मूलसंवेदना :

यह कविता 'संसद से सड़क तक' काव्य संग्रह से ली गई है। जिसमें कवि 'धूमिल' अराजक राजनीति के सांमती व पूंजीवादी मुखौटे को संसद से उठाकर सड़क तक ले आए है। कविता के माध्यम से श्रम करनेवाला पहला आदमी 'किसान/ मजदूर' वर्ग का प्रतीक है जो रोटी बेलता हैं, श्रम का फल खानेवाला। दूसरा आदमी है जो रोटी खाता हैं, वह बुद्धिजीवी या फिर जनता है। तीसरा आदमी जो ना रोटी बेलता है ना खाता है अर्थात वह एक 'राजनीतिक व्यक्ति' का प्रतीक है जो किसानों और मजदूरों (आम जनता) की भावनाओं और उनके श्रम से खेलता है। एक सुजान नागरिक प्रश्न पुछता है कि, यह तीसरा आदमी कौन हैं? तो संसद के किसी भी नेता के पास इसका उत्तर नहीं हैं। यहां राजनीतिक व सामंती पूंजीवादी का पर्दाफाश किया है।

'रोटी और संसद'

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता हे, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ.........
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
मेरे देश की संसद मौन है।

कठिन शब्द के अर्थ :

- एक आदमी रोटी बेलता है = श्रम करने वाला वर्ग
- एक आदमी रोटी खाता है = आम जनता
- तीसरा आदमी = तीसरा आदमी जो ना रोटी बेलता है, ना खाता है, वह सिर्फ रोटी से खेलता है (संसद का नेता / पूँजीपति वर्ग)

'किताबें'

— सफ़दर हाशमी

जीवन परिचय :

सफ़दर हाशमी का जन्म १२ अप्रैल १९५४ को दिल्ली में हनीफ़ क़ौमर आज़ाद हाशमी के घर हुआ। आपका आरंभिक जीवन अलीगढ़ और दिल्ली में गुजरा। आपका एक प्रगतिशिल मार्क्सवादी परिवार में लालन-पालन हुआ। दिल्ली के सेंट स्टीफेन्स कॉलेज से अंग्रेजी में ग्रेज्युएशन किया तथा दिल्ली युनीर्व्हसिटी से अंग्रेजी में एम. ए. किया। यहीं से 'स्टुडेंटस फेडरेशन ऑफ इंडिया' की सांस्कृतिक युनिट से जुड़ गए। इसी बीच 'इप्टा' से उनका जुड़ाव रहा। हाशमी जननाट्य मंच के संस्थापक और सदस्य थें। १९७३ में इप्टा से अलग होकर 'सीटू' जैसे मजदूर संगठनों से जुड़े। साथ ही जनवादी छात्रों, महिलाओं, युवाओं, किसानों इत्यादी के अंदोलनों में भी इनकी सक्रिय भूमिका रही। १९७५ में आपातकाल के लागू होने तक सफ़दर हाशमी (जनम) संघटन के साथ नुक्कड़ नाटक करते रहें। उनके एक नाटक 'मशीन' को लगभग दो लाख मजदूरों की विशाल सभा के सामने आयोजित किया गया था। आपने बहुत से वृत्तचित्रों और दूरदर्शन के धारावाहिकों का निर्माण भी किया है। आपकी मृत्यु तक २४ नुक्कड़ नाटकों को ४००० बार प्रदर्शित किया गया। सफ़दर हाशमी ०१ जनवरी १९८९ को गाज़ियाबाद में झंडापुर में 'हल्लाबोल' नुक्कड़ नाटक को प्रदर्शन कर रहे थे तब भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के कार्यकर्ताओं ने उन्हें गोली मार कर गंभीर रूप से जखमी कर दिया था। उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया गया तब वहाँ उनकी ०२ जनवरी १९८९ को मृत्यु हो गई।

'किताबें' कविता की मूल संवेदना :

'किताबें' कुछ तो कहना चाहती है। सफ़दर हाशमी की यह कविता 'दुनिया सबकी' इस काव्य संग्रह से ली गई है। आधुनिक युग में देखा जाए तो पाठकों का किताबों से लगाव बहुत कम हो गया है। यहाँ किताबों की ज़ुबा (वाणी में) में कवि कविता करता नज़र आता है। जहाँ कवि किताबों के बड़े संसार को जैसे के किताबों में जीवन है, प्रकृति है, ज्ञान भंडार है, जिज्ञासा है, किताबें ही जीवन का फलसफ़ा (जीवन का उद्देश) आदि को समझा कर किताबों के महत्व को बता कर फिर से उन्हें मानव जीवन में वापस स्थान दिलाना चाहता है। जिससे किताबों का स्थान और महत्व फिर से बरकरार रहेगा। आज वर्तमान युग जो डिजीटल का युग कहलाता है जहाँ ऑनलाईन पढ़ाई पर जोर दिया जा रहा है। वहाँ इस कविता की बहुत अधिक अवश्यकता जान पड़ती है। आज का छात्र किताबों से दूर होने लगा है। तब यह कविता उसे किताबों से जोड़ने की बात करती है।

'किताबें'

किताबें करती है बातें
बीते ज़मानों की
दुनियाँ की, इंसानों की

आज की कल की
एक-एक पल की।
ख़ुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
सुनोगे नहीं क्या
किताबों की बातें ?
किताबें, कुछ तो कहना चाहती है
तुम्हारे पास रहना चाहती है।
किताबों में चिड़िया दीखे चहचहाती
कि इनमें मिले खेतियाँ लहलहाती।
किताबों में झरने मिलें गुनगुनाते,
बड़े खूब परियों के किस्से सुनाते।
किताबों में साईंस की आवाज़ है,
किताबों में रॉकेट का राज़ है।
हर इक इल्म की इसमें भरमार है,
किताबों का अपना ही संसार है।
क्या तुम इसमें जाना नहीं चाहोगे ?
जो इनमें है, पाना नहीं चाहोगे ?
किताबे कुछ तो कहना चाहती है,
तुम्हारे पास रहना चाहती है!

कठिन शब्दों के अर्थ :

- ज़माना = युग
- किस्से = कहानियाँ
- राज़ = रहस्य
- इल्म = ज्ञान।

'गीत नया गाता हूँ'

- अटल बिहारी वाजपेयी

परिचय :

अटल बिहारी वाजपेयी जी भारत के एक प्रतिष्ठित राजनेता, निस्वार्थ कार्यकर्ता, सशक्त वक्ता, सहृदय कवि एंव संवेदनशील पत्रकार रहे है। आपका जन्म २५ दिसम्बर १९२४ में ग्वालियर मध्यप्रदेश में हुआ है। आपके पिता का नाम 'कृष्ण बिहारी वाजपयी' जो एक स्कुल के अध्यापक तथा हिंदी ब्रज भाषा के कवि रहे है। आपकी माताजी का नाम 'कृष्णा देवी' एक ग्रहणी रही है। अटल बिहारी वाजपेयी अपने परिवार की सातवी संतान रहे है। जो आजन्म अविवाहित रहे है। आपकी आरंभिक शिक्षा ग्वालियर बड़नगर के गोरख विद्यालय से हुई। आगे की शिक्षा विक्टोरिया कॉलेज से तो राजनीतिक में एम.ए., एल.एल.बी. की उपाधि कानपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की। आप छात्र जीवन से ही छात्र संगठन, राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के कार्यकर्ता तथा शाखा प्रभारी रहे हैं। आप १९५२ में लोकसभा चुनाव में असफल रहे। १९५७ में बलरामपुर उत्तरप्रदेश से लोकसभा के सदस्य चुने गए। १९८० में 'भारतीय जनता पार्टी' में शामिल हुए। १९९६ में देश के प्रधानमंत्रि बने जो १९९६, १९९८, २००४ तीन बार प्रधानमंत्री पद का पदभार संभाला। वाजपेयी जी एक सफल राजनेता के साथ-साथ एक संवेदनशील कवि के रूप में हिंदी साहित्य जगत में चर्चित है। आपकी 'मेरी इक्यावन कविताएँ' नामक काव्य संग्रह प्रकाशित है। जिनमें ताजमहल, रग-रग हिंदू मेरा परिचय, मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान, संसद में तीन दशक आदि है। आपको कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा १९९३ में डी.लिट. की उपाधि प्रदान की गई और श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा २७ मार्च २०१५ को 'भारत रत्न' सम्मान से सम्मानित किए गए। ऐसे विविध अष्टपैलू व्यक्तित्व रखनेवाले अटल बिहारी वाजपेयी जी का देहांत २०१८ में दिल्ली में हुआ।

कविता की मूलसंवेदना :

'हार नहीं मानूंगा' इस कविता के माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी जी युवाओं को समस्याओं के विरुद्ध स्वयं को प्रेरित करने का संदेश देते हैं। जहाँ वे हर प्रकार की नकारात्मकताओं का नाश करने के साथ-साथ, स्वयं को प्रेरित करने की बात करते है। यह कविता हमें सकारात्मकता के साथ जीवनयापन, नये उत्साह, प्रेरणा के साथ नये जीवन के आरंभ का संदेश देती है।

'गीत नया गाता हूँ'

गीत नया गाता हूँ।
टूटे हुए तारों से फूटे बासंती स्वर,
पत्थर की छाती मे उग आया नव अंकुर,
झरे सब पीले पात,
कोयल की कुहुक रात,

प्राची में अरुणिम की रेख देख पाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी?
अन्तर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी।
हार नहीं मानूंगा,
रार नहीं ठानूंगा,
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।

कठिन शब्द के अर्थ :

- बासंती स्वर = एक प्रकार की रागीनी।
- प्राची = पूर्व दिशा।
- अरूणिम = सूर्य की पहली किरण।
- सिसकी = अधिक रोने के बाद सिसकने की एक क्रिया या भाव/ धीरे-धीरे रोनी की ध्वनि।
- काल = समय।
- कपाल = ललाट/ मस्तक/ माथा।
- ठिठकी = रूकना।

'इस स्त्री से ड़रो'

— कात्यायनी

जीवन परिचय :

समकालीन हिंदी साहित्य की कवयित्री कात्यायनी का जन्म ०७ मई १९५९ को गोरखपूर, उत्तर प्रदेश में हुआ। हिंदी साहित्य में उच्च शिक्षा के बाद आप विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से संबद्धित रहीं और वामपंथी सामाजिक-सांस्कृतिक मंचों से संलग्नता के साथ स्त्री, श्रमिक, वंचित से जुडे प्रश्नों पर सक्रिय रही है। कात्यायनी जी की प्रतिबद्धता और प्रतिपक्ष आपके जीवन और आपकी कविताओं में अभिव्यक्त होता है। आपके काव्य का स्वर प्रतिरोध का स्वर है। स्वयं अपने शब्दों में वे कहती है - "कवि को कभी-कभी लड़ना भी होता है, बंदूक भी उठानी पड़ती है और फ़ौरी तौर पर कविता के ख़िलाफ लगनेवाले कुछ फैसले भी लेने पड़ते है। ऐसे दौर आते रहे है और आगे भी आएँगे।" आपकी कविताओं का स्त्री-विमर्श जितना निजी है उतना ही सामूहिक। कात्यायनी जी का विमर्श हिंदी के लिए मार्क्स और सिमोन के बीच का एक पूल लिए आता है, जिस पुल से उनका वर्ग-चेतस फिर पूरी पीड़ित आबादी को आवाज़ लगाता है।

प्रमुख रचनाएँ :

"चेहरों पर आँच, सात भाइयों के बीच चंपा, इस पौरुषपूर्ण समय में, जादू नहीं कविता, राख अंधेरे की बारिश में, फुटपाथ पर कुर्सी, और एक कुहरा पारभाषी" आपके प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। इनकी कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद, रूसी और प्रमुख भारतीय भाषाओं में हुआ है।

कविता की मूल संवेदना :

'इस स्त्री से ड़रो' यह कविता 'दुर्ग द्वार पर दस्तक' इस काव्य संग्रह से ली गई है। जो स्त्री-विमर्श पर आधारित कविता है। इसमें स्त्री जीवन की कठिनाइयों को वह किस तरह संघर्ष कर उसका सामना करती है। हर पल उसे चुनौतियाँ मिलती है, पर उन्हें स्वीकार कर उनसे घबराकर पीछे नहीं हटती, किसका सहारा नहीं लेती। संकटों का सामना स्वयं ही करती बीना ड़रे, बिना रूके, बिना हार माने जीवन पथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहती है। यहाँ स्त्री पितृसत्ताक पद्धती या पुरुषवर्गीय समाज का दृढ़ता और साहस के साथ सामना करती नज़र आती है। इसी का चित्रण इस कविता में हुआ है।

' इस स्त्री से ड़रो '

यह स्त्री
सबकुछ जानती है
पिंजरे के बारे में
जाल के बारे में
यंत्रणा-गृहों के बारे में
उससे पूछो।

पिंजरे के बारे में पूछो,
वह बताती है
नीले अनंत विस्तार में
उड़ने के
रोमांच के बारे में।

जाल के बारे में पूछने पर
गहरे समुद्र में
खो जाने के
सपने के बारे में
बातें करने लगती है।

यंत्रणा-गृहों की बात छिड़ते ही
गाने लगती है
प्यार के बारे में
एक गीत।

रहस्यमय है इस स्त्री की उलटवासियाँ
इन्हें समझो।
इस स्त्री से ड़रो।

कठिन शब्दों के अर्थ :

- पिंजरा = पंछी को कैद कर रखने वाली वस्तु।
- जाल = पक्षीयों को फँसाने वाला जाल।
- यंत्रना-गृहो = यातना, तकलीफ, दर्द, वेदना, पीड़ा देनेवाला घर, कैद घर।
- अनंत = जिसका अंत न हो, जिसका पार न हो, असीम, बेहद, आपार।
- उलटवासियाँ = सिधा अर्थ न लेकर जहाँ उलटा अर्थ लिया जाता है उसे उलटवासियाँ कहा जाता है।
- रोमांच = भय, हर्ष या आश्चर्य के कारण शरीर के रोएँ (त्वचा के ऊपर के रोम) खड़े होना।

'जंगल चीता बन लौटेगा'

- उज्जवला ज्योति

परिचय :

उज्जवला ज्योति जी का जन्म १७ फरवरी १९६० को दिल्ली में हुआ। पिता चीरस तिग्गा मूल रूप से भंडरिया, गढ़वा (झारखंड) के रहेनवाले थे, लेकिन कृषि मंत्रालय में नौकरी मिलने के बाद अगस्त १९५९ से दिल्ली में ही बस गए है। उज्जवला जी की प्रारंभिक शिक्षा केंद्रीय विद्यालय, दिल्ली (१९७६) से संपन्न हुई। १९८१ मे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से राजनीति-शास्त्र मे स्नातकोत्तर करने के बाद १९८३ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, दिल्ली में अनुभाग अधिकारी के पद पर इन्होंने अपनी दूसरी नौकरी की और आज तक वहीं कार्यरत है। लेखन की ओर आपका झुकाव बचपन से रहा। हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं में आप लिखती रही है। १९८४ से १९९० तक ज्योति जी का लेखन पत्र-पत्रिकाओं में छपना शुरू हो गया था। ज्योति जी के बचपन का नाम 'डोराथी' है और 'डोरोथी' के नाम से भी इनकी रचना कई पत्रिकाओं में छपी है। इनकी कुछ प्रमुख कविताएँ है -

प्रमुख कविताएँ :

(१) धरती के अनामयोद्धा, (२) जंगली घास, (३) पानी का बुलबुला, (४) जंगल चीता बन लौटेगा

इन्हे प्राप्त सम्मान : (१) २०१३ को आदिवासी साहित्य सम्मान। (२) 'धरती के अनामयोद्धा' के लिए "जयपाल-जुलियुस-हन्ना" पुरस्कार से सम्मानित।

कविता की मूल संवेदना :

प्रस्तुत कविता में आदिवासी चेतना अंकित है। कवयित्री कहती है कि, जंगल और जंगल में रहनेवाला आदिवासी मनुष्य शांत नहीं बैठेगा, अभी वह खामोश नहीं रहेगा। उसे चुप नहीं करा सकते। वह अभी जाग गया है। वह न तो स्वप्नलोक में रहेगा और न तो रोते बैठेगा। अब जंगल का दर्द आग का दरिया बनेगा। आँसुओं की बाढ़ धधकती लावा बनेगी। अब आदिवासी मिमियाता, घिघियाता नहीं रहेगा बल्कि एक दिन चिता बनकर लौटेगा। जल, जंगल और जमीन के दोहन को बचाएगा। पुरखा और आदिवासित धरोहर को दुबारा पुर्नजीवित का सपना देख रहा है। प्रस्तुत कविता में जहाँ एक ओर व्यवस्था से विद्रोह है तो दूसरी ओर नये सपनों का संकल्प है।

' जंगल चीता बन लौटेगा '

जंगल आख़िर कब तक ख़ामोश रहेगा
कबतक अपनी पीड़ा के आग में
झुलसते हुए भी
अपने बेबस आँसुओ से
हरियाली का स्वप्न सींचेगा

और अपने अंतस में बसे हुए
नन्हे से स्वर्ग में मगन रहेगा
. . . .
पर जंगल के आँसू इस बार
व्यर्थ न बहेंगे
जंगल का दर्द अब
आग का दरिया बन फूटेगा
और चैन की नींद सोने वालों पर
कहर बन टूटेगा
उसके आँसुओं की बाढ़
खदकती लावा बन जाएगी
और जहाँ लहराती थी हरियाली
वहाँ बयावान बंजर नज़र आऐंगे
. . . .
जंगल जो कि
एक खुबसुरत ख्वाब था हरियाली का
एक दिन किसी डरावने दु:स्वपन सा रूप धरे लौटेगा
बरसों मिमियाता घिघियाता रहा है जंगल
एक दिन चिता बन लौटेगा
. . . .
और बरसों के विलाप के बाद
गूँजेगी जंगल में फिर से
कोई नयी मधुर मीठी तान
जो खींच लाएगी फिर से
जंगल के बाशिंदे को उस स्वर्ग से पनाहगाह में

कठिन शब्दों के अर्थ :

- अंतस = हृदय (अंतकरण)।
- क़हर = संकट, आपत्ति, गुस्सा, क्रोध, शाप।
- दरिया = समुद्र। लावा = ज्वालामुखी का रस।
- ख्वाब = स्वप्न।
- मिमियाता-घिघियाता = डरपोक/ कमजोर।
- चीता = बिल्ली की जाति का एक प्रकार का बहुत बडा़ हिंसक पशु।
- जंगल के बाशिंदे = जंगल के रहनेवाले, निवासी।
- विलाप = रो कर, चिखकर दु:ख व्यक्त करना।
- पनाहगाह = शरणस्थान, आश्रय/ वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति सुरक्षा, गोपनीयता, विश्राम या एकांत के लिए जा सकता है ।

'कोरोना व्हायरस'

- अनंत काबरा

जीवन परिचय :

डॉ. अनंत काबरा जी का जन्म ०४ सितम्बर १९६० (अनंत चतुदर्शी) को हैद्राबाद में हुआ। आपको ८० के दशक में 'नयी कविता' के जनक के रूप में जाना जाता है। आपकी शिक्षा बी.कॉम. स्नाकोत्तर में एम.ए. (हिंदी, दर्शनशास्त्र, पुरातन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व साथ ही पत्रकारीता शामिल है।) श्रीमदभागवत गीता पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा डी. लिट. की उपाधि (स्वामी विवेकानंदजी पर) प्राप्त की है। आधुनिक हिंदी जगत में प्रभा मंडल के ज्वाजल्यमान वरिष्ठ कवियों में आप विशिष्ठ स्थान रखते है। आपकी कविताओं को 'नयी कविता' के रूप में पहचान मिली है। आपने 'नयी कविता' के माध्यम से आनेवाली कवियों की पीढ़ी को एक नया कैन्वस प्रदान किया है। आपने हिंदी की अनेक विधाओं पर लेखनी चलाई है। आपकी कूल ८६ पुस्तके प्रकाशित हुई है और शेष शिघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है।

प्रमुख रचनाएँ :

कहानी संग्रह : समय की आड़ में (जो एक ही है)

लघु कथा संग्रह: कोल्हू क पीला बैल, गेरूवा गिरगिट, सर्पिला चाल

चार सुक्ति कोश: दिग्दर्शन – १, २, ३, ४

कविता संग्रह : यौद्धा, मंथन, पगडंड़ी, चक्रव्युह, अटकले, कूच, दिखावा, मलयुद्ध, सत्य, थाह, टाह, डाह आदि आपकी मौलिक रचनाएँ है।

आपकी समस्त रचनाओं में सकारात्मक ऊर्जा देखने को मिलती है। जिसमें सामाजिक संवेदना, राष्ट्रीय सांस्कृतिक बोध, राजनीतिक विद्रुपता, देशभक्ति, सनातनधर्म आदि पर मौलिक अभिव्यक्ति हुई है।

कविता की मूल संवेदना :

'कोरोना वायरस' इस कविता के माध्यम से कवि 'कोरोना वायरस' के प्रति सभी मानवजाति को आभार, धन्यवाद और कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए को कहते है। जिससे विश्व के समस्त मानवजाति को जीवन का गहन अर्थ समझमें आया। जिसने जीवन की रिश्तों को, अपनों को, कर्तव्य को, दायित्व को तथा राजनीतिज्ञों की स्वार्थ परकता का भंडाफोड़ कर दिया है। इससे पहले हम सभी एक ऐसे भ्रम में जीए जा रहें थे, उस भ्रम को इस कोरोना वायरस ने चकनाचूर कर दिया है। इस संक्रमण काल के कारण ही हमारी मानवता किस तरह जर्जर, संवेदनाहीन, मानवताहीन होती गई देखी गई है। इस कोरोना वायरस ने जीवन के रहस्य को उजागर कर हमारी आँखें खोल दी है। कवि का मानना है कि अगर यह कोरोना संक्रमण काल नहीं आता तो

हम यूँ ही ऐसे ही भ्रम में जी रहे थे। पर आज हमें प्राणवायु (ऑक्सिजन), शुद्ध पर्यावरण, पैसा, रिश्ते, मानवता, मानव जीवन आदि का महत्व अच्छी तरह समझ में आ गया है। जो हमारे लिए अत्यंत ही महत्वता रखते है।

'कोरोना व्हायरस'

कोरोना का आभार व्यक्त करो
उसको धन्यवाद देकर
कृतज्ञता अभिव्यक्त करो
उसने बहुत गहरे अर्थ दिए हैं
जीवन को
उसने बहुत गहरी संवेदनाएँ दी हैं
जीवन को
जो संदर्भ बन सामने आ गई
जीवन की एक नहीं
कई सच्चाईयाँ सामने आ गई
लोगों का गुस्सा दिखा
अपनों के प्रति प्यार, कर्तव्य, दायित्व बोध
स्वीकार, धिक्कार, हमारा अंगीकार
उस पर चली गई चालें
रचे गए षडयंत्र, साजिश और उनका अंजाम
सभी एक साथ
अपनी अपनी बोली में
अपनी अपनी ठिठोली से
बहुत कुछ कह गए
कुछ खड़े रह कर
कुछ मथ्था टेककर सजदा कर गए
इंसान का सच, रिश्तों का अर्थ
उससे पहले इतना कभी मुखर नहीं हुआ
जो अभी हुआ है
कोरोना संक्रमण में हुआ है

कठिण शब्द के अर्थ :

कोरोना वायरस = एक प्रकार का संक्रमण रोग (जो एम मानव के संपर्क से हजारों करोड़ो को संक्रमण हो सकता है।) कृतज्ञता = उपकार के बदले धन्यवाद ज्ञापीत करने के भाव। षड़यंत्र = साजिश, चाल अंजाम = अंत मुखर = स्पष्ट